CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. रोगन तारपीन १ तोला, रोगन बादाम ७ तोला दोनों को खूब मिलाओ सोते समय रुई में तर करके फोहा कान में रखें सुबह निकाल देवें। पुराने से पुराना बहरापन चन्द दिन में ठीक होगा।

मुंह की छाईयां, कील के लिए

१. सन्तरे का छिलका आधा पाव छाया में सुखा पीसके और बराबर बाजरे का आटा लेके तोला हल्दी मिलाकर पानी में रोजाना आटे की तरह गूंथकर मुंह पर मल ५ मिनट के बाद मुंह को गर्म पानी से धोलें। मुंह की छाईयां कील दूर होंगी। थोड़ासा नीबू निचोड़ लिया करें। बीस दिन तक मलें।

२. मलाई २ तोला में चौथाई नीबू निचोड़ कर सवेरे और रात को मलने से चेहरे का रंग साफ होगा। सन्तरे, सलाद, गाजर, टमाटर खूब खायें।

३. ग्लेसरीन २ तोल में दो गोली मिवाभोज की ...ते माशा पीसकर मिलालें। दिन में तीन बार रुई से लगावें छाले व मुहासे दूर हो जायगे।

पेशाब बार-बार होना

१. गेहूं १ तोला धोकर रात्रि को भिगोकर रखे सुबह ... डण्डा से इस प्रकार रगड़े कि लेही की तरह हो जावे। इसमें थोड़ी सी मिश्री मिलाकर चाटें।

२. काले तिल आधा पाव कूटकर आधा पाव गुड़ की चासनी से १-२ तोला के लड्डू बनाकर सुबह शाम १-१ खायें। बच्चों को सिर्फ एक लड्डू दें। पेशाब बार-बार आने को रोकने की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़िया दवा है। यह दवा सिर्फ सर्दियों के लिए है।

दर्द हर किस्म

एक गोली कोडोपाइरीन जो कि मैडिकल स्टोर से मिल जाती है। चाय या ताजे पानी के साथ खाने से दांत, कान, सिर, आंख हर किस्म के दर्द को फायदा करती है। बहते जुकाम के लिए गोली गर्म पानी के साथ खायें।

मच्छर मार पाउडर

सेलखड़ी २ सेर, अरारोट एक सेर, आइल युकलेपटस दो छटांक को अच्छी तरह मिलाकर डिब्बे में बन्द रखें। रात को सोते समय थोड़ा सा जिस्म पर मलने से मच्छर पास तक नहीं आयेंगे।

मच्छर मार तेल

नीला स्ट्रोआइल एक पौंड, सरसों का तेल चार पौंड मिला कर शीशी में भर लें और रात को लगाकर सोयें। मच्छर नहीं काटेंगे।

चूहे भगाने की दवा

१, आटा ५ छटांक, गोले का तेल एक छटांक, बेरमकारबोनेट १ छटांक सबको मिलाकर पानी में गोलियां तैयार करे। जहां डालेंगे १–२ चूहे मरकर बाकी भाग जायेंगे।

२. गेमेक्सीन जोकि पंसारी की दुकान से मिल जाती है। छटांक लेकर एक पाव पानी में घोलकर चहों के बिल में डाल दें चूहे भाग जायेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नजर तेज सुरमा—

जस्त का फूला जिसको सफेदा या जिंक कहते हैं एक तोला। बोरिक एसिड एक तोला, फिटकरी फूला एक तोला, कलमी शोरा ३ माशा, सबको बारीक पीस छान कर शीशी में भरलें। रात को रोजाना आंखों में लगायें। नजर तेज होगी। छोटे बच्चों के न लगायें। फिटकर सफेद आग पर फुला लें।

आवाज खोलना—

अदरक का रस ३ माशे शहद ५ माशे दोनों को मिलाकर दिन में ३ बार चाटें। बन्द गला खुल जायेगा।

लू लगना—

तीन कच्चे आम गर्म राख में भूनकर गूदा निकालकर पाव पानी में मिलाकर चीनी डालकर दिन में दो बार दियें की बीमारी दो दिन में ठीक हो जायेगी। बर्फ भी डाल सकते

स्याही मिठाना—

हाईड्रो जोकि पंसारी की दुकान से मिलेगी। १ तोला लेकर ३ तोला पानी में मिलाकर शीशी में बन्द रखें। हर प्रकार की पैन की स्याही के लिये थोड़ी सी रुई के साथ लगानें से स्याही मिट जाऐगी।

ताकत के इन्जैक्शन लगवाना—

१. ये इन्जेकशन बदन की कमजोरी के अलावा हर किस्म की ताकत व सुस्ती को बहुत लाभदायक हैं। लगवाकर ताकत हासिल होगी नाम ट्रैस्ट्राट्रोन ५० मिली ग्राम हर छटे दिन लगायें

२. सेक्स विगर सी० डी० सी० हर चौथे रोज लगायें। पूरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कोर्स १० दिन का है। लगवाने से पहले डाक्टर से मशवरा करले।

गन्जापन—

तूतिया एक माशा, मुर्दासिंग ६ माशे, सोना मक्खी ६ माशे, लाल मिर्च १ माशे, जायफल १ तोला, लौंग १ तोला इन सब को बारीक करके कपड़े में छन लें तेल सरसों का आधा पाव मिला कर रोजाना सिर पर ४० दिन तक मालिश करें। गन्जेपन को बढ़िया दवा है।

खुज़ली दूर करना

गन्धक २ तोला गोले के १।। छटांक तेल में मिलाकर रात को मालिश करके सो जायें। ३-४ दिन करें। खुजली के लिये अक्सीर स. काफूर ३ माशे मिलायें। या
आ

१-१ तोला बावची, जोक, खुरासानी अजवान. नीला थोथा ;यद इन पांचों को साथ कूट लें। फिर सरसों के तेल में मिला लो और एक घण्टा धूप में बैठकर शरीर से मलें। बाद में साबुन से स्नान करने से सिद्ध लाभ होगा।

मरहम दाद खुजली—

गन्धक १ छटांक बंशलोचन ४ छटांक, बौरीक १ तोला, कपूर ६ माशा, जिंक १ तोला सबको मिलाकर खुजली वाली जगह पर रोजाना मालिश करें। यह दवा दाद को भी आराम करता है। तूतिया १।। माशा और नीम के पत्ते ७ माशे और मिला दें।

छाजन की दवा—

पीले ततैया का छत्ता लेकर आधा पाव तिल के तेल में जला कर जब काला हो जाय तो आग से उतारकर नीम के हरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डण्डे से एक घन्टा तक रगडाई करें। जब लेई की तरह हो जाय तो शीशी डाल कर रखें दिन में तीन बार लगायें। छाजन के लिए बहुत बढ़िया दवा है।

दवा मुंह के छाले गले का दर्द—

१. ग्लेसरीन २ तोले में दो गोला सिवाजोल को पीसकर मिला लें दिन में तीन बार रुई से लगायें छाले दूर होंगे गले के दर्द को आराम होगा कब्ज हो तो दूर करलें। पान का कत्था भी मुंह के छालों को ठीक करता है।

२. घी देशी आधी छटांक आग पर खूब गर्म करें और काफूर ३ माशा डालकर आग पर से उतार रखें। उस घी को मुंह में लगाने से छाले बहुत जल्द ठीक हो जाते हैं कब्ज होतो दूर करलें

तेल जले के लिए—

गोले का तेल एक छटांक खूब गर्म करके इसमें चार माशा कपूर डाल दें। तेल तैयार हो जायेगा। हर किस्म के जले पर दिन में तीन बार लगायें। तेल ठण्डा करके लगायें।

शहद की पहचान—

एक जिन्दा मक्खी पकड़ कर उसके ऊपर दो छटांक शहद डाल दे। अगर मक्खी निकल कर उड़ जाए तो असली शहद होगा और अगर मक्खी फंस जाये तो शहद नकली होगा।

२. एक बूंद शहद एक गिलास पानी में डालें बूंद नीचे बैठ जाय तो असली शहद होगा।

चींटी भगाना—

थोड़ी सी हींग पानी में घोल कर जहां डालोगे चींटी भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जायेंगी।

पेशाब का रुक जाना—

कलमी शोरा एक तोला, दूध एक पाव, पानी एक सेर सब मिलाकर वगैर मीठे के दो–तीन बार करके पाले। पेशाब खुलकर आयेगा। हर मौसम के लिये है।

पेशाब का बार बार आना—

पिस्ता ६ माशा, सुनक्का ३ दाने काली मिर्च ३ दाने सुबह शाम चबाकर खायें। बार–२ पेशाब का आना बन्द होगा।

नुसखा पेचिस—

सौंप, जीरा, सफेदा, धनिया, काली हरड़ १–१ तोला देशी घी से चुपड़कर थोड़ा भून ले। पोदीना एक तोला, रास्त का डाडा एक तोला बारीक पीस लें। वजन खुराक ३ माशा दिन में तीन बार पानी से खायें खिचड़ी दही खायें। बच्चे का एक माशा।

पेट हलका करने का तरीका—

सवेरे टट्टी से फारिग होने के बाद चौकड़ी मारकर सीधे बैठकर दाहिना पाव बांया रान पर और बांया पाव दाहिनी रान पर रखलें। एक नाक ऊंगली से बन्द करके सांस खीचें। फिर दूसरी नाक से आहिस्ता–आहिस्ता सांस छोड़ें। पहले दिन सिर्फ १ मिनट फिर १-१ मिनट तक रोजाना ऐसा करें। ५ मिनट से ज्यादा हरगज न करे। दही रोजाना खाये। दो महीने से पहले पेट छोटा और हलका हो जायेगा।

दर्द आधा सिर—

जीरा काला एक माशा, नमक सैंदा तीन माशा, पीसकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाक में सूंघें। आधे सिर का दर्द ठीक होगा। जिस तरफ दर्द हो उसकी दूसरी नाक में दो बूंद शहद डालें। कान में तेल डालें।

काली खांसी—

फिटकरी भूनकर बारीक करें। वजन खुराक एक रत्ती थोड़ी सी चीनी में मिलाकर दिन में दो बार खायें। पांच दिन में खांसी ठीक हो सकती है। बड़े आदमी के लिये दो रत्ती दें। जेफरील जोकि मैडिकल में मिलती है खांसी के लिये बहुत अच्छा है। इस्तेमाल कर सकते हैं।

बिच्छू काटे का इलाज—

नौसादर २ तोला। कुए में डालने वाली दवा पोटाश परमैंगनेट १ तोला दोनों को बारीक पीसकर रखें। जहां बिच्छू ने काटा हो थोड़ी सी छिड़क कर पानी २ बूंद डाल दें, दर्द गायब होगा। अगर ततैया काटें तो भी लगा सकते हैं।

चेहरा साफ करना—

मूंग की दाल धुली हुई एक छटांक रात को पानी में भिगो रखें। सुबह बारीक करके आधा नीबू निचोड़ कर मुंह पर रोजाना १ महीना मलें। रंग साफ और काले झाइयां दूर हो जायेंगी। गाजर, सलाद, सन्तरा टमाटर खूब खायें।

पेट के कीड़े मारना—

कबीला १ तोला बायबिडिंग २ तोला दोनों को बारीक पीसलें वजन खुराक बच्चे के लिए २ रत्ती गर्म दूध के साथ दिन में १ बार, बड़े आदमी के लिए दो माशा दूध के साथ ३–४ दिन खिलायें। पेट के कीड़े मरकर पखाने के साथ निकल जायेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नुस्खा पेट के रोग का—

त्रिफला, अजवावन, काला नमक १-१ छटांक, सौंप, काली मिर्च, पीपल १-१ तोला, घी ग्वार आधा सेर सब को कूट छानकर घी ग्वार के छोटे २ टुकड़े काट के मिट्टी के बर्तन में १५ दिन तक धूप में रखें। दवा तैयार है। पेट में बाय का दर्द, कब्ज, भूख का न लगना वगैरा के लिए दो टुकड़ गर्म पानी के साथ दिन में दो बार खाना खाने के बाद खायें। पेट के रोग दूर होंगे। नमक सैंदा एक छटांक और मिलायें। पेट फूलना, जी मिचलाना, खट्टी डकार बन्द होगी।

पेट के दर्द के लिए—

अजवायन २ माशा, नमक २ माशा मिलाकर गर्म पानी के साथ खायें। पेट का दर्द १० मिनट में ठीक हो सकता है।

नुस्खा कान के लिये—

१ तोला सरसों का तेल गर्म करके ६ माशा बोरिक एसिड मिलायें पीप और दर्द के लिए २ बूंद रोजाना कान में डालें। पुरानी पीप का आना १० दिन में ठीक हो सकता है। यह दवा बहुत बढ़िया है।

नुस्खा जिगर तिल्ली—

कासनी बन्सलोचन, छोटी इलायची, मन्डूर भस्म, जवाखार २ तोला, मिश्री कून्जा ३ तोला सबको बारीक पीसकर मिलालें। वजन राक २ साल से ५ साल के बच्चे के लिए ४ रत्ती, बड़े आदमी के लिए एक माशा बकरी के दूध के साथ हर मौसम में खायें। जिगर तिल्ली को बहुत फायदा देगा।

कान के लिये—

कौड़ियां पीले रंग की आठ दानेकोयले पर रख कर भस्म

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करके पीसकर कपड़े में छान लें। पहले कान में डालकर ४ बूंद नीबू का रस डालें। कान की पीव चन्द दिनो पुरानो से पुरानी खत्म हो सकती है।

कुत्ता के काटे का इलाज

१ तोला लहसुन को बारीक पीसकर उसमें थोड़ा सा सिरका मिलाकर गाढ़ासा लेप करें। जहर पानी होकर निकल जाएगा। बावला कुत्ता हो तो इन्जैकशन जरुर लगवाना चाहिए।

छाजन

हल्दी की गांठ पानी में पत्थर पर घिसकर रोजाना १ महीने लगायें। यह सिर्फ गीली छाजन के लिए है।

इलाज पीलिया यरकान

मिश्री कूजा २ तोला, बन्सचोचन १ तोला, छोटो इलायची १ तोला सबको बारीक पीस छानकर ३ माशा पानी से २ दिन खायें यह खुराक बड़े आदमी के लिए है। पीलिया-यरकान की बहुत बढ़िया दवा है। खटाई का परहेज करें।

स्वप्न दोष की

अच्ले का चूर्ण एक तोला जल के साथ लेकर सोने से स्वप्न दोष जाता है।

गन्जापन का इलाज

हाथी दांत के चूर्ण की राख तेल में मिलाकर लगाने से बाल जम जाते हैं।

आधा शीशी की दवा

पानी में हींग घोलकर दर्द की तरफ के नाक के छेद में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सुंतवा देने से तत्काल आराम होता है ।

चेहरा खूबसूरत करना

बेसन और हल्दी में थोड़ा तेल और पानी मिलाकर उबटन करने से चेहरे का मैल साफ हो जाता है ।

कब्ज पर

ऐलुआ, रेवलचीनी, इन्द्रायन के बीज समभाग लेकर १–१ रत्ती की गोली रात को दूध के साथ दें ।

बहरेपन की दवा

मोर का पंजा तेल में जलाकर कान में डालने से बहरापन मिट जाता है ।

बुढ़ापा दूर करना

असगन्ध के चूर्ण की फक्की लगाकर आध सेर दूध पीने से मनुष्य तरूणाई से काम करने लगता है ।

रोशनी निर्मल करना

निर्मली के बीज पानी में घिसकर दोनों वक्त लगाने से दृष्टि निर्मल हो जाती है ।

ताजे घाव की औषधि

ताजे घाव पर दुधी का रस अथवा बूरा या ऐलुआ का चूर्ण बांध देने से रक्त का बहाव तत्काल बन्द हो जाता हैं ।

जले हुये की दवा

जले हुये पर दही को लगाते ही ५ मिनट में जलन मिट जाती है। छाला नहीं पड़ता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाखूनों की लाली बनाना

स्प्रोट २ तोला, चपड़ा १ तोला, मजन्टारङ्ग ६ माशे लेकर एक जगह मिलाकर शीशी में रख दो। लाली बन जायेगी।

माथे की बिन्दी बनाना

स्प्रीट २ तोला, चपड़ा १ तोला, सिगरिफ घिसा हुआ ६ माशा शीशी में मिलाकर रखलो बिन्दी लगाने योग्य बन जाती है।

जूड़ी का इलाज

फिटकरी का फूला एक माशा, गेरू १ माशा, काली मिर्च दस नग, नौसादर ४ रत्ती सबको लेकर पीसकर पुड़िया बनालें। और शहद में मिलाकर जूड़ी आने मे पहले चारों पुड़ियों को खालें जूड़ी अवश्य रुक जायेगी यदि न रूके तो पेट साफ करके फिर लेना।

मृगी का इलाज

असगन्ध को जलाकर उसका धुआं देने से दौरा मिट जाता है।

कपड़ा धोने का साबुन बनाना

पाव भर काष्टिक सोड़ा लेकर एक सेर पानी में डाल दो। सोड़ा घुल जाय तब उस पानी में १ सेर अण्डी का तेल थोड़ा २ डालकर लकड़ी से चलाकर छोड़ दो। इसके पश्चात यह जमकर साबुन बन जायेगा। यह साबुन कपड़े धोने के काम का है।

नहाने का साबुन

यदि नहाने का साबुन बनाना हो तो उपरोक्त विधि में नारियल का तेल डालना चाहिये। और पानी में भी कोई रंग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भिलाना तथा तेल में सुगन्धि मिला देने से इच्छानुसार नहाने का साबुन तैयार होगा। जम जाने पर पलट कर टिकिया काट कर रखलें।

बालकों के सूखा रोग का इलाज

भैंस का ताजा गोबर को कन्धे से कमर तक मलने पर काला रंग का जा कोड़ा दीखे जल्दी से ही बीन लें बाद में बच्चे को गर्म पानी से न्हला दें पीठ साफ करदें। ८–६ दिन सेवन करने से सूखा मसान नष्ट होगा।

वेदमा हरण

एमषिरन भाग कफीन साइट्रास और केलशियम एक-एक भाग मिलाकर ४ दिन तक पानी के साथ लेने से दर्द फौरन बन्द बन्द होगा।

अतिसार दस्त की दवा

आम और जामुन की गुठली, सौठ, बेलगिरी, मोचरस कैथ का गूदा सूखा हुआ ६ चोजें बराबर २ लेकर तोन २ माशे चावल के माढ़ में मिलाकर लेने से सभी प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

खूनी पेचिस का इलाज

छोटी इलायचो, धनिया, चन्दन हफेद, पौस्त का छिलका सब बराबर लेकर चूर्ण करके बराबर की खांड मिलाकर ४–४ माशे की पुड़िया दिन में तीन चार बार जल के साथ लेने से खूनी पेचिश को आराम हो जाता है।

मुख के छालों की दवा

हर्र छोटी पानी में घिस कर दिन में ३–४ बार लगाने से बालकों के मुंह के छाले मिट जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुभूति योगावली

औषधि द्वारा शरीर शोधन (आरोग्यक्षा)

शरीर का शोधन औषधि द्वारा भी होता है आजकल लगभग निन्यानवें प्रतिशत मनुष्यों को कोष्ठबद्ध अर्थात पूर्णतया मलत्याग न होने का विकार होता है। जिससे भजन अर्थात मन की एकाग्रता में नाना प्रकार के विघ्न उपस्थित होते हैं। उनके निवारणार्थ चिकित्सा के अभाव में कब्ज तथा अन्य साधारण रोगों के शान्त करने के लिए अभ्यासियों के उपयोगी कुछ अनुभूत तथा अनुभवी सन्यासियों, वैद्यों, डाक्टरो और हकीमों से प्राप्त की हुई औषधियां लिख देते हैं।

कोष्टबद्ध दूर करने की रेचक ओषधियां

१. त्रिफला (हड़, बहेड़ा, आवला समभाच) दो माशे से ६ माशे तक अथवा केवल बड़ी हड़ का चूर्ण २ माशे से ६ माशे तक अथवा इतरीफल जमानी एक तोला से दो तोला तक रात को सोते समय दूध अथवा पानी के साथ।

बड़ी हढ़ का प्रयोग पूरे वर्ष के लिये

चैत-वैसाख	हड़ का	चूर्ण ३ माशे	शहद एक तोला से	२ तोला	के	साथ
ज्येष्ठ-अषाढ़	,,	,,	गुड़	,,		,,
श्रावण-भादों	,,	,,	सैंधानमक १ माशे से	३ माशे	के	साथ
क्वार-कातिक	,,	,,	मिश्री १ तोला से	२ तोला	के	साथ
मार्गशीर्ष-पौष	,,	,,	पीपल १ माशे से	३ माशे	के	साथ
माघ-फल्गुन	,,	,,	सौंठ ,,	,,	,,	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

२--गुलाब के फूल एक तोला, सैंधा नमक एक तोला, बड़ का बक्कल १ तोला, सौंठ १ तोला, सनायकी पत्ती ४ तो इनका चूर्ण २ माश से ६ माश तक रात को सोते समय प के साथ अथवा दिन में अवश्यकतानुसार । (अनुभूति

३–सनाय की फली ६ घण्टे तक थोड़ें से (आधी छटांक प में भिगोकर फली निकालकर पानी को पीना । (अनुभूति)

४–रब्बूस्सूस १ तोला, बन्सलोचन १ तोला, एलुआ दो तो रेवन चीनी दो तोला, रूमो मस्तगी १ तोला सबका चूर्ण ख करके थोड़ा सा पानी डालकर चने के बराबर गोली बना एक गोली सोते समय दूध या पानी के साथ लें। (अनुभूति)

५–रूमी मस्तीगी, असार रेवेन्द, एलुआ, सुरन्जान ब बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करके चने के बराबर गालियां ब एक गोली सोते समय दूध या पानी के साथ लें। (अनुभूति)

६–खील सुहागा ६ माशे, एलुआ ६ माश, निसौत ३ म बड़ी हड़ का बक्कल दो तोल, सनाय की पत्ती दो तोल, सक निया बिलायती १ माशा सब का घीकुमार के रस में खरल क चने के बराबर गोलियां बनावें सोते समय एक गोली दूध या के साथ ले । (अनुभति)

७–सकमीनिया बिलायती १ तोला, जुलाफा हड़ एक एलुआ १ तोला. रेवेन्द असार १ तोला. रूमी मस्तगी १ सौंठ ६ माशे, भरमुकी ६ माश सबको पानी में खरल करके के बराबर गोली बनावें सोते समय एक गोली दूध या पा साथ। (अनुभूति)

वात विकार नाशक तथा रेचक—

१–रेवेन्द चीनी (रेवन चीनी), सोडा खाने का, सौंठ ब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकर चूर्ण करलें। सोते समय १ माशे से ४ माशे तक दूध या पानी के साथ लें।

२—त्रिकुटा अर्थात पीपल, कालीमिर्च, सौंठ बराबर लेकर चूर्ण करलें सोते समय ३ माशे से ६ माशे तक दूध के साथ लें कफ तथा बात नाशक।

३—एलुआ, तिर्वी सफेद (निसौत); सुरन्जान मीठा, सब सम भाग उनके चूर्ण की घीकुमार के गुदे में खरल करके चने के बराबर गोली बनावें। १ या २ गोली रात को सोते समय दूध या ताजे पानी के साथ खाये। रेचक, पाचक, बातविकार, दर्द, आदि कब्ज और आम को दूर करता है। (अनुभूति)

कफनाशक पाचक और रेचक

बड़ी हरड़ की बकुली तीन तोला, काली मिर्च चार तोला, पीपल छोटी दो तोला, चव्वह एक तोला, तालीस पत्र एक तोला, नागकेशर ६ माशा, पीपला मूज २ तोला. पत्रज १।। माशे, छोटी इलायचीं तीन माशे, दार चीनी ३ माशे, नीलो फर के फूल ३ माशें इन सबका चूर्ण बनावें इन सबकी चार गुणी मिश्री की चासनी बनाकर उसमें उस चूर्ण को मिलावें ३ माशे से एक तोले तक सोते समय दूध के साथ या दोपहर को खाने के बाद लें।' (अनुभूति)

१—बिगड़े हुये जुकाम, खांसी, सिर का भारी रहना, सिर तथा आधे सिर का दर्द या हर प्रकार के मस्तिष्क तथा पेट के विकारों के लिये अत्युत्तम रेचक अनुभूति औषधि—

अयारूज फिकरा की यूनानी दवा कई औषधियों का चूर्ण एक माशा से ३ माशा तक इत्रोफल, कशनीजी एक तोला से २ तोला तक में मिलाकर प्रातः दूध के साथ खा सकते हैं।

अयारूज फिकरा का नुसखा—बालछड़, सलीफा, दार चीनी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

असावंन, जाफरान, ऊदबलसान, हुबबलसाब, रूमी मस्तगी एक तोला एलुआ एक पाव इन सबका चूण।

अयारूज फिकरा का दूसरा नुसखा जो स्वयं बनवाना हो अत्तारों के पास न मिल सकेगा।

पोस्त इन्द्रायन (हिजल) ५ तोला, गाज़ीकोन ५ तोला। सक मानिया विलायती ५ तोला, अफतीमूल ३ तोला, गूगल शुद्ध ३ तोला, अनीसून ३ तोला, तज ३ तोला, काली मिर्च ३ तोला, ३ तोला. उस्तखद्दश ३ तोला. गुलाब के फूल ३ तोला, वादर वोया ३ तोला, पौदीना २ तोला पोस्त तुरज २ तोला वगगांव २ तोला, इन सबके चूर्ण से दुगुना शहद मिलाकर ४० दिन बाद ३ माशे से एक तोला तक खुराक।

२-हर प्रकार के विगड़े हुये जुकाम दिमागी खराबी हाजमे के लिये निहायत अनुभूति।

मुजरबं नुसखा

लौंग एक तोला, पत्रज २ तोला, बड़ी इलालायची दाना (तोला, अकरकरा ४ तोला, दारचीनी ५ तोला पीपलामूल ६ तो पीपल छोटी ७ तोला, काली मिर्च ८ तोला, सौंठ ९ तोला, चन्दन का चूर्ण १० तोला, इस मात्रा में इनका चूर्ण होना चा इसलिये इन सबके चूर्ण का अलग नाप लें। सबको एक करके सु और शाम ४ रत्ती से १ माशा तक शहद के साथ खाये।

३--जुकाम का बन्द होना, सर का दर्द तथा खांसी एवं बहुत लाभदायक। (अनुभूति)

नौसादर उड़ाया हुआ अथवा शुद्ध किया हुआ २ रत्ती, फिटकरी एक रत्ती, खिल सुहागा एक रत्ती।

साधारण जुकाम के लिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. गुलबनफ़सा ६ माशे. मस्तगी (खतमी के बीज अथवा तखमो का गुगा) ४ माशा उस्तखुद्दूश १ माशा मुलहटी ४ माशा गावजवां ४ माशा बड़ी हड़ ६ माशा उन्नाव विलायती ७ दाने लहसोड़ा ११ दाने इनका जोशांदा मिश्री या चीनी डालकर सुबह या सोते समय पीवें इन चीजों को आवश्यकतानुसार न्यून अधिक कर सकते हैं। (अनुभूत)

प्राणायाम ध्यानादि क्रिया से उत्पन्न होने वाली खुशकी के लिए

१. मीठे बादाम की गिरी, ११ से १५ तक काली मिर्च ११ दानें सौंफ ४ माशा, गुलाब के फूल ४ माशा, कासनी ४ माशा, गुलबनफशा फूल ४ माशा बड़ी इलायची के दाने २ माशा इन सबको बारीक पीस छानकर मिश्री या बूरा १ छटांक डालकर पियें, सर्द मौसम में इन को घी में छौंक कर पियें। इन चीजों को आवश्यकतानुसार न्यून अधिक कर सकते हैं। (अनुभूत)

२ इलायची के दाने, जीरा, बादाम की गिरी, मुनक्का, गुलबनफशा, मिश्री का आवश्यकतानुसार मात्रा में पीसकर चाटें (अनुभूत)

३. रूमी मस्तगी, इलायची के दाने, बन्सलोचन सम-मात्रा इससे दुगनी मिश्री, सबका चूर्ण १ माशा घी या मक्खन में खूब खरल करके सोते समय दूध या बिना पानी के खायें (अनुभूत)

आंव का रोग मरोड़ एव पेचिस के लिये—

१. सौंफ आधी भुनी हुई और आधी कच्ची पीसकर उसमें मिश्री या चीनी मिलाकर दिन में कई बार दो तीन चुटकी ले। (अनुभूत)

२. सौंफ, सौंठ, बड़ी हड़के बक्कल, सब बराबर २ लेकर सौंठ एवं हड़को किसी कदर घी में भूनकर सबको कूटकर चीनी मिला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सोते समय ४ माशा से ६ माशा तक पानी या दूध के साथ खायें यह रेचक भी है। (अनुभूत)

३. ईसबगोल का सत अर्थात उसकी भूसी ६ माशा दूध में घोलकर पीना। (अनुभूत)

४. गर्मी के आंव, पेचिश एवं दस्त के लिये गोंद कतीरा १ तोला बिलगिरी २ तोला ईसबगोल ४ माशा विहीदान ३ माशा, अर्क वेदमुश्क ६ छटांक में सबका चूर्ण मिलाकर खिलायें।

५. बालगु के बोज ३ माशा, गुलाब का अर्क १ पाव, रोगन बादाम १ माशा, शबत शहतूत २ तोला सबको पकाकर रात को खिलाये और उस रात खाने को कुछ न दें।

साधारण ज्वर के पश्चात निर्बलता दूर करने के लिये

दारचीनी ३ माशा छोटा इलायची के दाने ६ माशा पीपल छोटी १ तोला, बन्सलोचन २ तोला, गिलोय का सत २ तोला मिश्री ८ तोला इनका चूर्ण १ माशा घी में चिकनी करके शहद मिलाकर खाना। (अनुभूत)

खांसी खुश्क या तर

१. गोंद बबूल ६ माशा, कतीरा ६ माशा, बहेड़ा ६ माशा, मुलहटी १ तोला, काकर सींग ३ माशा, रब्बूसस (मुलहटी का सत) ६ माशा, नमक काला १ तोला, भूने हुये लाल इलायची के दाने १ तोला, कूट छानकर चने के बराबर गोलियां बनायें। १ गोली मुंह में डालकर रस चूंस।

२. रब्बूसूस १ तोला, मुलहटी ४ तोला का कारासीनी २ तोला, सौंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, पीपल १ तोला विही-दाना १ तोला, मगज बादाम (बादाम की गिरी १ तोला पीसकर शहद में चने के बराबर गोलियां बनावें। एक या दो गोली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ोते समय मुंह में डाले रहें। खांसी के वक्त भी मुंह में रखकर (स। रहें अनुभूत)

३–अनार का छिलका जला हुआ चार रत्ती पानी के साथ।

सांस दमा खांसी आदि के लिये

पारा शुद्ध गन्धक शुद्ध, मीटा तेलिया शुद्ध, त्रिकुटा सौंठ, ोपल काली मिर्च सुहागा की खिल कानी मिर्च सम-भाग लेकर बका चूर्ण बनाकर अदरक के रस में खरल करें। एक रत्ती ादरक के रस के साथ लें।

दमा के अनुभूत नुस्खे—

स्थायी रूप से रोग को जड़ से हटाने के लिये निम्नलिखित ौषधियां अनुभूत सिद्ध हुई है।

१ प्रातःकाल एक छटांक अदरक का रस शहद के साथ। ात्रि में किसी समय एक ताला सौंठ भारगी और बड़ी हरड़ का ूर्ण समभाग पानी के साथ। यदि फिर भी कुछ नजले आदि का शकायत रहे तो एक या आधा शुद्ध किया हुआ झिलवा गाय ; दूध में आठाकर पीवें अथवा आधी या एक रत्ती शुद्ध कुचला ; चूर्ण को चार रत्ती त्रिकुटा के चूर्ण में मिलाकर सोते समय ाय के दूध के साथ सेवन करें।

२–दमे में स्थायी रूप से ताकत के लिये श्वास कुटार अभ्रक स्म लोहा भस्म प्रातः एवं सायंकाल शहद के साथ लें। अनुभूत। िन्तु दौरे का अवस्था में इसको न दें। कफ के सूख जाने से हानि ोने की सम्भावना हो सकती है। जरित हिंगुल चान्द्रोदय ोमनाथी ताम्र भस्म मल्य चन्द्रोदय और मल्य सिंदूर भी ाभदायक सिद्ध हुये हैं। किन्तु दौरे तथा गर्म ऋतु में इनका सेवन न किया जाए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अन्य साधारण औषधियां

३. नौसादार धतूरे के रस में उड़ाया हुआ दो रत्ती पानी या दूध के साथ लें। इसके अभाव में शुद्ध अथवा साधारण नौसादर भी लाभदायक है। (अनुभूत)

४. चने के छिलको का पाताल-यन्त्र से निकाला हुआ तेल एक बूंद बताशे के साथ।

५. पीली कौड़ी तीन दिन पानी में नमक मिलाकर रखें फिर गर्म पानी से धोकर एक उपले पर कौड़ियों को रखकर दस उपले ऊपर से रखकर जलावे। जब कौड़ियां जल जायें तब आक के दूध में खरज करके टिक्की बनाकर एक मिट्टी के बर्तन में रखकर भीगी मिट्टी लगे हुये कपड़े से लपेट कर जलायें उसको पीसकर आक के दूध में फिर पकावें तीन बार ऐसा ही करें फिर इसको पीसकर एक रत्ती शहद के साथ प्रातः सांय खायें ऊपर से गाय का दूध पीवें।

६. लोहे की कढ़ाई में चार तोले कसमी शोरा रखकर उसके ऊपर और चारों ओर एक छटांक भलावा फैलाकर किसी बर्तन से ढक दें। एक अंगीठीं में कोयला जला कर उसको ऐसीं जगह पर रख दें। वहां किसी को धुवां न लेगे। जब जल कर जम जाये तो खुरच कर शीशी मे रख लें। खुराक—दो रत्ती बताशे में। परहेज—खटाई, लाल मिर्च इत्यादि।

७. सं० ३ व ६ की वसूटी के खार के साथ दो से चार रत्ती गले में डालकर ऊपर से दूध या पानी पीलें।

८. मदार धतूरा वसूटीका खार उड़ाये नौसादर के साथ अथवा अलग २ चार रत्तो तक उपर्युक्त विधि अनुसार।

९. कड़वे तम्बाकू के पत्ते एक पात्र मिट्टी के बर्तन में डालकर मदार के दूध से खूब भिगो दें। सूख जाने पर बर्तन को सम्पुट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करके उपलों में भस्म करें। एक रत्ती प्रातःकाल उबले हुए चनों के पानी के साथ। घी दूध का सेवन रहे। दवा की मात्रा धीमे-धीमे बढ़ाते जायें।

१०. निम्नलिखित औषधि दमा के लिये अत्यन्त उपयोगी और अनुभूत बतलायी गयी है, यह अत्यन्त गोपनीय थी। हमने प्राप्त तो कर लिया है किन्तु कभी उसको बनवाने तथा प्रयोग करवाने का अवसर नहीं मिला है। पाठकों के हितार्थ लिखी जाती है :

नौसादर १ तोला, सुहागा भुना हुआ १ तोला, कलमी शोरा १ तोला, खील फिटकरी १ तोला, लोटन सज्जी १ तोला। सबको पीसकर आक के एक सेर दूध में भिगोकर कोरे बरतन में रखकर उसे सम्पुट करके २४ घन्ट तक आंच दें। २-३ बार इसी प्रकार आक दूध में भिगोकर आंच दें यदि जलते हुये कोयले पर रखने से धुंआ दे तो कच्ची समझना चाहिये। प्रयोग विधि ३ रत्ती निहार २॥ (ढाई) तोला शुद्ध मक्खन में मिलाकर खाये। दोपहर को मूंग दाल फुलका खायें। दाल में पकते समय २ तोला शुद्ध घी डालें। औषधि—सेवन के पांच घन्टे के अन्दर तक ठन्डा पानी न पीयें गर्म पीयें। रात को १ तोला बनफशा उबाल कर दूध खांड डालकर पीयें। रात्री को भोजन बन्द रखें सब प्रकार के नशे तम्बाकू सिगरेट खटाई तेल आदि का परहेज। यदि कब्ज हो तो २॥ ढाई तोले गुलकन्द रात को दूध के साथ खायें।

११. भांग के पत्ते डेढ तोला धतूरे के पत्ते डेढ़ तोला इन दोनों को कूटकर २ तोले कलमी शोरा पानी में भिगोकर उसमें मिलाकर धूप में सुखा लें। एक माशा यूकेलिप्टस – आयल मिलाकर रखलें। इनकी सिगरेट बनाकर पिलायें। धुआं कुछ देर रोक कर छोड़ दें। तुरन्त दमा का दौरा रूक जायेगा। (अनुभूत)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

२. लाल फिटकरी को भस्म १ छटांक सख्या २ आने भर को कागजी नीबू के रस में खरल करे बाजरे के दाने के बराबर गोली बनायें। गाली मुंह में रख कर चूसें। (अनुभूत)

एक छटांक चना १ पाव पानी में उबालना चाहिये। जब आधा पानी रह जाय तब उस पानी के साथ १ रत्ती भस्म लेना चाहिये। परहेज–गुड़, तेल, खटाई, चाय, लाल मिर्च अनुभूत)

बदहजमी दस्त एवं कै लिए—

१. अमृतधारा की दो चार बूंद पानी बताशे के साथ लें।

अमृतधारा नुस्खा—

पोपरमैंट १ तोला, काफूर १ तोला, अजवाइन का सत १ तोला, दारचीनी का सत ६ मशा लौंग का सत ६ माशा छोटी इलायची का सत ६ माशा सबको मिलाकर १ शाशी में रख ले। दो बूंद पानी या बताशे में लें। (अनुभूत)

२. सन्जीवनी बूंटी जो वैद्यों के यहां बनी हुई मिलती है। अदरक या सौंठ के रस के साथ लें। (अनुभूत)

सन्जीवनी बटी का नुस्खा—

बायबिडग सौंठ पोपल काली मिर्च बड़ी हड़ आंवला बरेड़ा बच्छगिलोय भलावा शुद्ध मीठा तेलिया शुद्ध सब समभाग इनका चूर्ण सात दिन तक गोमूत्र में खरल कर गोलियां बनायें।

भलावे की सनशोधन विधि—

बिना ब्यायीं गाय (बछेरी) के गोबर के साथ पकायें और कच्चा ईंट के चूण में डालकर उसके नाक काटें और गर्म पानी में धोयें। इसके शोधन में सावधान रहे धुंये से बचें। मीठा तेलिया दूध में जब सींक गड़ने लगे तब समझना चाहिये कि यह पक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया है। संजीवनी वटी को अजार्ण रोग में अदरक के रस के साथ एक गाली हैजे में, दो गाली सांप के काटे में, तीन गोला सन्नीपात अर्थात सरसाम में, चार गोली और खांसी में सौंठ के साथ बतलाया गया है।

अजीर्ण (बदहजमी) के लिये

१. अष्ठक गोली—सौंठ काली मिच पोपल जीरा एव सफेद अजमोद प्रत्येक १-१ तोला हींग घो में भुनी हुई ६ माशे नमक काला डेढ़ तोला गन्धक शुद्ध दो तोला। सबको पीसकर कागजी नोबू के रस में खरल करके चने के बराबर गोली बनायें। खाने के बाद १ या २ गाली लें। (अनुभूत)

२. भुना हुआ सुहागा पीपल बड़ो हड़का वक्कल हिंगुल अर्थात शिगरफ एक-एक तोला सबको कागजी नीबू के रस में खरल करके मटर के बराबर गोली बना लें। (अनुभूत)

३. हींग घो में भुनी हुई ६ माशा जोरा सफेद और काला मिर्च सफेद (दक्षिणी), सेंधा नमक, पीपल प्रत्येक डाई तोला नीबू का सत ६ तोला, मिश्री ६ तोला सबको चूर्ण करके। (खुराक चार माशा)

४. अजीर्ण पेट का फूलना वायु विकार खांसी श्वासादि विकारों को हटाकर जठराग्नि बालो अनभूत दवा आनन्द भैरव रस हिंगुल अर्थात शिगरफ शुद्ध २ तोल गन्धक आंबलेसार (शुद्ध) एक तोला मीठा तेलिया शुद्धएक तोला खील सुहागा १ तोला सौंट १ तोला पीपल १ तोला काली मिर्च १ तोला धतूरे के बीज ८ तोला अदरक के रस में खरल करके काली मिर्च के बराबर गोली बनायें। एक या दो गोली प्रातः और सांयकाल दूध या पानी के साथ लें। (अनुभूत)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

५. सौंठ एक तोल काली मिर्च एक तोला पीपल छोटी एक तोला काला जीरा एक तोला सफेद जीरा एक तोला अजवायन एक तोला सैंधा नमक एक तोला हीर हींग एक तोला टा?गी २ माशा राई एक तोला आक (मदार) के फूल सूखे एक तोला सबको कूट छानकर लगभग ६ नीबू कागजी के रस में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनावें। एक गोली भोजन के पश्चात पानी के साथ। (अनुभूत)

संग्रहणी—

१. बड़ी हड़, मोचरस, पठानी लोध, घावे के फूल, बेलगिरी इन्द्रजी, अफीम, पारा शुद्ध, गन्धक आंवलसार सब समभाग गन्धक और पारे की कजली करके अन्य सब दवाओं का चूर्ण मिलाकर खरल करें। ३ रत्ती प्रातः काल गौ के छाछ के साथ ३ रत्ती सांय काल बकरी के दूध के साथ अथवा खसखस के दूध के साथ। भोजन चावल मूंग की खिचड़ी दही के साथ।

२. एक तोला शुद्धगन्धक आंवलेसार को एक माशा त्रिकुटे के साथ खूब बारीक पीसकर ३ भाग बनावें तीन मलमल के टुकड़ों पर एक-एक भाग रखकर ३ बत्तियां बना दें। एक बत्ती को तिल के तेल में भिगोकर जलावें ३ बूंद एक पान में टपकाकर उसमें दो रत्ती शुद्ध पारा डालकर खिलायें। तीन दिन ऐसा करें खुराक दूध चावल।

हैजा—

मदार का गूदा ३ तोला बारीक पीसकर दो तोला अदरक के रस में खरल करके चने के बराबर गोली बनावें। गुलाब के अर्क या ताजा पानी के साथ एक गोली खिलाय।

अम्लपित्त से हाजमा ठीक न रहना—

अबिपत्ति कर चूर्ण, सौंठ, काली मिर्च, पीपल, हड़, बहेड़ा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंवला वायविडंग नागर मोथा पत्रज छोटी इलायची के दाने विड़ नमक एक-एक तोला लौंग ग्यारह तोला निसौत ४४ तोला मिश्री ६६ तोला इन सबका कपड़छन चूर्ण घी में चिकना कर शहद मिला कर रखलें। माशे एक तोला एक रात को सोते समय दूध के साथ या दिन में भोजन के बाद ताजे पानी के साथ लें यह रेचक भी है। (अनुभूत)

बात विकार के लिये—

१. बातारि गूगल—गूगल शुद्ध, गन्धक शुद्ध, हड़, बहेड़ा आंवला का चूर्ण सब बराबर वजन में लेकर कैस्टर आयल (अरण्डी का तेल) में ६-६ माशे की गोली बनावें। सोते समय एक गोली दूध के साथ लें। यह रेचक भी है। वायु के दर्द को दूर करता है। (अनुभूत)

२. वातव्याधि के लिये अरण्डी पाक—

यह रेचक है शीत काल में अधिक लाभदायक है। त्रिकुटा डेढ़ तोला, लौंग ६ माशे बड़ी इलायची के दाने ६ माशे. दारचीनी ६ माशे पत्रज ६ माशे नागकेशर ६ माशा असगन्ध १ तोला. सौंफ एक तोला, सनाय एक तोला, पीपल मूल ६ माशा, माले के बीज (निरगुण्डी) ६ माशे, सतावर ६ माशे, बिसखपरा (पुननवा) सफेद की जड़ का बक्काल ५ माशा खसखस ६ माशा जायफल ४ माशा, जावित्री ४ माशा इन सब का चूर्ण करें। दस तोले अरण्डी के बीज की गिरी बारीक पीसकर एक सेर गाय के दूध से मावा बनावे उसको २ छटांक गाय के घी में भूनें। फिर दवाओं का चूर्ण और एक सेरबूरा मिला कर ६ ६ तोला के लड्डू बनावे खुराक एक लड्डू गाय के दूध के साथ अथवा बिना दूध के प्रातः काल एवं सायंकाल खायें यह रेचक भी है। (अनुभूत)

३. गठिया और प्रत्येक वातविकार के लिये—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एक छटांक अरण्डी के बीज रेत में या भाड़ में भुनाकर चबाय और उसके ऊपर आधा सेर या जितना पिया जा सके गाय का दूध पिलायें। इससे दस्त आयेंगे। सात दिन तक ऐसा करें। खुराक दाल मूंग और चावल को पतली खिचड़ी। हवा से बचाये रखे।

४. वातविकार के लिये असगन्ध चोबचीनी आंवला समभाग चूर्ण ६ माशा साते समय दूध या पानी के साथ।

५. वात के रोग की अत्यन्त पीड़ा में चरस (सुल्फा) आधी रत्ती खिलाकर गाय का दूध के घी के साथ पिलायें (अनुभूत)

आधा सिर का दर्द, नयनोंका बन्द रहना, सिर का भारी रहना

१. बनफशा का फूल उस्तखद्दूस वग सिब्वत बराबर वजन में लेकर कपड़छन चूर्ण बनायें अगुली से नयनों में लगावें।

२. नौसादर एक तोला काफूर ३ माशे पीसकर माथे पर लेप करें और सुघांयें।

३. जमाल घोटा शुद्ध यदि शुद्ध न मिल सके तो अशुद्ध पानी में पीस लिया जाय एक सींक से भवों के ऊपर मस्तिष्क पर बिन्दी लगावें। फ रन दर्द दूर हो जायेगा। उसी वक्त कपड़े से पोंछकर घी या मक्खन लगावें।

४. नारंगी के छिलके का रस दर्द से दूसरी ओर वाले नथुने में डालना।

५. रीठे का छिलका पानी में भिगोकर जिस कनकपटी में दर्द हो उसके दूसरी ओर वाले नथुने में डालना। कपड़छन रीठे का चूर्ण भी नाक में लगाने से सिर का दर्द दूर होता है।

६. नौसादर उड़ाया हुआ या शुद्ध किया हुआ, फिटकरी की भस्म गर्म दूध या पानी के साथ सेवन करें। ये सब औषधि अनुभूत हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रमेह पेशाब में शक्कर आना, स्वप्नदोषादि वीर्य के हर प्रकार के विकार के लिये

चन्द्रप्रभा का नुसखा

१. बच, नागर मोथा, चिरायता, गिलोय देवदारु दारूहल्दी अमीत, चव्य, गजपपल. सोनामक्खी, भस्म, सज्जीखार, काला नमक कचूर, हल्दी, पीपला मूल, चीता की छाल, धनिया हड़ बहेड़ा, आमला. वायविडग, त्रिकुटा, जवाखार, सैंधा नमक, बिड नमक, प्रत्येक ४-४ माशे निसौत, तेजपात छोटी इलायची के दाने गादन्तो, दारचोनी बन्सलाचन प्रत्येक १ तोला ४ माशे लोह भस्म २ तोला ८ माशे मिश्री ५ तोला ४ माश शिलाजीत शुद्ध १० तो० ८ माशे गूगल शुद्ध दस तोला आठ माशा सबका चूर्ण कपड़छन करके चने के बराबर गोली बनायें वैद्यों के पांस बनी मिलती हैं। सोते समय रात का अथवा प्रातःकाल दूध क साथ १ गोली।

सूर्य प्रभावटी का नुस्खा

२. गित्रक हड़, बहेड़ा, आमला, नीम के अन्दर की छाल पटोल पत्र मुलहटी, दालचोनी, नागकेशर, अजवायन, अमल वेत चिरायत दारूहल्दी, इलायची के दाने नागर मोथा पित्तपापड़ा नीला थोथा की भस्म, कुटकी, भारंगी, चव्य, पद्माक खुरसानो अजवायन पीपल काली मिर्च निसौत जामलगोटा शुद्ध कचूर सोंठ पोकरमूल जीरा सफेदनेवदारू तमाल पत्र कूढाकी छाल रसना दमासा गिलोय निसौत तालास पत्र तीनों नमक सैंधा काला और कचिया धनिया आजमोद सौंफ स्वर्ण माक्षिक (सोनामक्खी) भस्म जायफल बन्श-लोचन असगन्ध अनार की छाल नेत्रबाला दोनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

क्षार यानी सजजी और जवाखारकाली मिर्च प्रत्येक चारमि-चार तोला शुद्ध शिलाजीत बत्तीस चोला, गुगल शुद्ध बतीसा तोला लौह भस्म ३२ तोला रपामक्षिक (चांदी मक्खी) ८ तोला सबको चूर्ण बनाकर मिश्री ६४ तोला, गाय का घी १६ तोला, शहद ३२ तोला मिलाक चीनी के बर्तन में रखें अथवा गोलियां बनावें। खुराक एक माशा से चार माशा तक प्रातः अथवा सांय को दूध के साथ सूर्यप्रभावटी पेशाब में शक्कर आना इस रोग के लिये अति लाभदाक सिद्ध हुई है।(अनुभूत)

चन्द्रभा और सूर्यप्रभा सब मौसम में सब अवस्थाओं में सब प्रकार के रोगों में अनभूत ओषधि है।

इन सब प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र पेशाब में शक्कर का आना इत्यादि सब प्रकार का वात व्याधि उदर रोग गोलापाडु संग्रहणी हृदय रोग शूल खाँसी भगन्दर पथरी रक्त पित विषम ज्वर तथा बातजन्य पितजन्य रोग दूर होकर शरीर स्वस्थ्य और जठराग्नि प्रदीप्त होती हैं। अभ्यासियों के लिए अनुकूल है।

३. वंगभस्म चार रत्ती पान अथवा के साथ प्रमेह के लिये (अनुभूत)।

४. हरी गिलग का रस ४ तोला शहद ६ मांशे के साथ सुबह को प्रमेह के लिए पीवें। (अनुभूत)

५. सत बड़ ४ रत्ती गाय के दूध के साथ सिर्फ एक सप्ताह तक लें। (अनुभूत)

बड़ का सत बनाने की विधि

वड़ की कोपलें १० सेर बारीक काटकर ४० सेर पानी में पकादें। जब पत्ते गल जायें तब मल छानकर लोहे की कढ़ाई में पकाकर खोवा बना लें फिर १० तोला वहूफली का चूर्ण मिलाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४–४ रत्ती की गोली बनायें। एक गोली पानी में घोलकर उस पानी को दूध में मिलाकर दूध जोश दे केवल ७ दिन तक ईसबगोल की भूसी में ६ माशा और चीनी डालकर दूध को पियें। बड़ सत तैयार न हो तो बड़ की कोपल २ तोले की छोटे-२ टुकड़े कर एक पाव पानी में पकावें। फिर ईसबगोल की भूसी और बूरा मिला कर सिर्फ ७ दिन तक पिये। बिना ईसबगोल की भूसी के भी ले सकते हैं। वीर्य को गाढ़ा करके स्वप्नदोष इत्यादि सब प्रकार के वीर्य पात को रोकता है। अनुभूत साधुओं की गुप्त औषधि है। यह औषधि पौष्टिक है। इसलिए कब्ज न होने दें।

६. बृाह्मी घृत बृह्मी के पंचांग का रस २ सेर निकालें।

बृाह्मी के पंचांग का रस निकालने की विधि

यदि बृह्मी हरी हो तो २ सेर रस कूटकर निकाले। सुखी हो तो २ सेर को ८ सेर पानी में पकावे। जब २ सेर रह जाय तो छान ले। आंवले का छिलका हल्दी कठमठी (कुश्त शिरी) निसौत(तिर्वी) बड़ हड़ का छिक्कल पीपल छोटी मिश्री प्रत्येक २-२ तोला बच सेंदा नमक ६-६ माशा सब को २ सेर पानी में पकावे। जब आधा सेर रह जाये। सब मल छानकर ब्राह्मी का रस मिला कर लोहे की कढ़ाई या कलई के बर्तन में रखकर आग चढ़ावे और आधा सेर शुद्ध गौ का घी उसमें डालकर हल्की आग से पकावे घी बाकी रह जाय, तब उतारकर छान ले। और साफ बर्तन में रखले खुराक ६ माशा से तीन तोला तक गाय के दूध में प्रातः एवं सोते समय।

लाभ--वीर्य के सब प्रकार के रोगों को निव्रति वीर्य शुद्धस्मृति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एवं मष्तिक की शक्ति को बढ़ाने के लिये बुद्धि को तीक्षण क॰
कण्ठ को साफ करने बवासीर प्रमेह खांसो आदि रोगों के लि
अति लाभदायक है। वीर्य दोष से जिन पुरुषों अथवा स्त्रियों
सन्तान न उत्पण्न हों उन दिनों के लिये अति लाभदायक है।

ब्राह्मी घ्रत की दूसरी विधि

हरी ब्रह्मी हो तो पांच सेर सूखी हों तो दो सेर शंख पु
१ पाव त्रिफला १ पाव घुड़बच्च १ छटांक वायविडंग पीपल घनि
निसोत की जड़ लौंग छोटी इलायची तज सम्भालू के बीज
हल्दी १-१ तोला गिलोय २ तोला सबको मोटा कूट कर दस
पानी में भिगोकर अग्नि में खूब पकावें। ६ सेर रस के ला
पानी रह जाय तो मलकर छान लेवें। इस रस को लोहे की क
या कलई के बर्तन में चढ़ाकर ढाई सेर शुद्ध गौ का घृत
कर पकावें। अग्नि धीमी २ आठ दस घण्टे तक देते रहें
पानी का भाग जल जाय और रस का सब भाग इकठ्ठा हो ज
तब उतार कर कपड़े में छान लें। खुराक १॥ तोलें से ढाई त
तक आवश्यकतानुसार गाय के दूध के साथ प्रातः सायंकाल।

प्रमेह के लिये

७. बबूल की कोपले सुखाकर उसका चूर्ण करलें। ७ दिन
बड़ के दूध में भिगोकर फिर सुखाकर चूर्ण करलें। यह चूर्ण
तोला मूसली सफेद १ तोला इलायची के दाने २ तोला
हल्दी २ तोले वंग भस्म २ तोला शतावर चार तोले असग
तोले कच्ची खांड ५ तोले इन सब को मिलाकर रखें सबा
दवाई गाय के दूध के साथ देवें (अनुभूत)

८. मूसली काली पांच तोला. खेरका गौंद (कत्था) ५
छोटी इलायची के दाने ६ माशा छुवारे सात बादाम गिरी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिश्री दो तोले गूलर का दूध २ तोले सब को मिलाकर खूब कूटकर रखें। खुराक एक तोला गाय के दूध के साथ २१ दिन तक।

सोते समय पेशाब निकल जाना

आंवले का गूदा काला जीरा समभाग शहद मिलाकर।

पेशाब के साथ शक्कर आना

१. गुड़मार २ तोले जामुन की गुठली २ तोले बंशलोचन ६ माशे इलायची ६ माशे गिलोय का शत एक तोला पीपल की छाल तीन माशे मण्डूर भस्म एक माशा चांदी भस्म चार रत्ती शिलाजीत शुद्ध ३ माशा सबका चूर्ण करके चार माशा प्रातः एवं सायं काल गाय या बकरी के दूध के साथ (अनुभूत)।

२. गुडमार बबूल या गुलर का की जड़ अन्तर छाल जामुन की गुठली सौंठ समभाग कूट छानकर ६ माशा से ९ माशा तक गम पानी के साथ।

३. गिलोय सब्ज का रस निकाल कर उसमें पाशान भेद और शहद मिलाकर पिलावें।

४. सूर्य प्रभावटी इस रोग में आश्चर्यजनक लाभदायक सिद्ध हुई है। (अनुभूत)

बहूमूत्र

१. चत्रक की लकड़ी एक तोला कूटकर पावभर पानी मिठ्ठी के बरतन में रात को भिगोदे। सुबह को पकावें जब दो तोले रह रह जाय तब मल छानकर पिवें १५ दिन तक पीना चाहिए।

२. फरीद बूटी साये में सुखाई एक तोला मूसली सफेद एक तोले घोटकर सात दिन तक पिलायें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३. अजवायन देशी ६ माशा नागर मोथा ६ माशा कन्दर माशा काले तिल एक तोला सब को बारीक पीसकर दो तो गुड़ में मिलादें। खुराक ६ माशा प्रातः एवं सांयकाल पानी के सा

४. पीली हरड़ का छिलका और अनार का छिलका समभा कूट छानकर चार माशा प्रातः एवं सांयकाल पानी के साथ।

५. बढ़िया किस्म के बड़े अच्छे गूदेदार छुहारे दिन में ख के बाद रात को दूध से पहिले (अनुभत)।

हर प्रकार के बुखार के लिए—

तुख्मकासनी दो तोला गुल नीलोफर ६ माशा वर्गगावज माशा तुख्त खरबूजा ६ माशा, तुख्म खीरा ६ माशा गुलबनफ ६ माशा नागर मोथा ६ माशा सब्ज गिलोय ६ माशा (सब्ज मिल सके तो सूखा हुआ काम में लावें) छोटी इलायची ६ अ मुनक्का ५ अदद गुलकन्द ५ तोला सब दवाओं को एक सेर पा में जोश दें। फिर गुलकन्द मिलादें ठण्डा होने पर कई बार पि

बलगमी बुखार के लिये—

गुलबरफसा ६ माशे नीलोफर ६ माशे गावजवां ६ म कासनी मुनकाका ५ अदद छोटी इचायची ५ अदद नागर मो ६ माशे अन्जीर ५ अदद गिलोय एक तोले इन सब को पानी भिग़ो दें। सुबह को जोश देके मिश्री के साथ मिलाकर र ठण्डा होने पर थोड़ा २ पिलावें।

बुखार के लिये हर प्रकार के अम्लरित्त, गुरदज आदि रोगों में—

गिलोय, धनिया, लाल चन्दन, पद्याक, नीम की छाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबको बराबर वजन में लेकर चूर्ण बनावें। शाम को आधा सेर पानी में ढाई तोले भिगो दे सुबह को जोश दे। जब छटांक भर रह जाये तब पिलायें।

पित्तज्वर पर सफाई खून के लिए—

मुनक्का, अमलतास, कुटकी, पित्तपापड़ा, बड़ी हड़ का बक्कल, नागर मोथा सब बराबर वजन में लेकर ऊपर वाले नुस्खे की तरह ढाई तोला लेकर तैयार करें

बुखार के लिए और अनुभूत नुस्खे—

१. मगज करवजा (करंजुए की गिरी) २ तोला सैंधा नमक २ तोले इनका चूर्ण बनालें। चार रत्ती सुबह और शाम ताजे पानी के साथ। चढ़े बुखार में भी दिया जा सकता है।

२. करंजुए के पत्ते तबे पर किंचित आंच देकर चूर्ण बनाया जाय। चार रत्ती दिन में ३ दफा ताजे पानी के साथ खिलायें।

३. फिटकरी लाल एक पाव पीसकर आक के दूध में भिगोवे जब आक का दूध सूख जाय, तब मिट्टी के बर्तन में रखकर सम्पुट कर पांच से दस उपलों की आंच में जलावें ठण्डा हो जाने पर इस दवा को निकालकर पीस लें। खुराक एक रत्ती गाय के दूध के साथ। खांसी दमा बुखार तपेदिक आदि के लिये लाभदायक है।

४, गेरू दो तोले फिटकरी भुनी हुई २ तोला शक्कर सुर्ख ५ तोले मिलाकर दिन में २-३ बार ६-६ माशे ताजे पानी के साथ।

५. मृत्युंजय रस—शिगरफ दो तोले, गन्धक, आंवलेसार, मीठा तलिया शुद्ध खील सुहागा सौंठ पीपल काली मिर्च एक-एक तोला कागजी नीबू के रस में खरल करके काली मिर्च के बराबर गोली बनाये। एक गोली ताजा पानी के साथ। अनुभूत)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

६. तीसरे दिन का बुखार प्रातःकाल और बुखार आने से एक घन्टा पहले लाल फिटकरी की भस्म चार रत्ती से एक माशा तक अर्क गुलाब के साथ। (अनुभूति)।

७. चौथिया बुखार के लिये—संखिया और शंगर्फ बराबर करेले के रस में काली मिर्च के बराबर गोली बनावें। बारीवाले दिन बुखार से एक घन्टा पहले या प्रातःकाल एक गोली पान के साथ देवें। बुखार दूध चावल घी बुखार के समय बीतने के पश्चात। तीसरे एवं चौथे दिन के दोनो बुखारो के लिये अनुभूति बतलायी गई है।

तपेदिक के लिये—

१. गिलोय का सत बंशलोचन छोटी इलायची के दाने काली मिर्च शलाबा शुद्ध समभाग पीस कर काली मिच के गराबर गोली बनावें। पहिले दिन एक गोली एक पाव गाय दूध के साथ लें। प्रत्येक दिन दूध २ तोला बढ़ते जायें एक सेर तक। भलात्रे को शोभनविधि सन्जीवनीवटी के नुस्खं देखें।

२. वर्ग करेला—करेले के पत्ते चार तोला मुश्क काफूर एक तोला इन को बारीक घोटकर एक माशे की गोली बनावें। बुखार आने के चार घन्टे पहले पानी के साथ खिलावें।

३. एक पोई का लहशन यदि न मिले तो साधारण लहशन को ही कूटकर दुगने पानी में उबालें फिर मल छानकर उस पानी को पकावें जब गाढ़ा हो जावे तो चने के बराबर गोली बनावें प्रातः व सांयकाल एक या दो गोली ठन्ड पानी के साथ खिलायें।

पायेरिया के लिये दांतों का मन्जन

१. लाहौरी नमक तेजबल फिटकरी भुनी हुई तम्बाकू के पत्ते भुने हुये गेरू काली मिर्च सोंठ सब १-१ तोला लेकर चूर्ण बनालें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दांतों से मलकर पानी निकलने दें।

२. नमक और सरसों का तेल मिलाकर दांतों पर मले। दांतौन से दांत साफ करें। लाहौरी नमक और सरसों का तेल पकाकर रखलें। दांतों पर लगाकर सीवें।

३. मिट्टी के तेल के गरारे करने से भी पार्यरिया दूर हो जाता है।

दाढ़ का दर्द

१. ६-७ माशे कुचला दरदरा करके पानी में औटाकर गरारे करना।

२. मदार आक का पेड़) की लकड़ी जलाकर दुखित दाढ़ से दवा कर राल निकालते रहना।

३. पेट की सफाई तथा उपर्युक्त किसी रेचक बात नाशक औषधि का सेवन लाभदायक है।

दांतों के सब रोग नाशक

४. कुचला १ तोला देशी नीला थोथा ३ तोले इनको सम्पुष्ट करके जलावें। जब राख हो जाय तब माजूफल का चूर्ण १ तोला फिटकरी सफेद ६ माशे सबको बारीक पीसकर बढ़ की दाढ़ी दातौन से लगावें।

फल—मसूडों का साफ होना, दांतों का जमना, पायोरिया तथा मुंह की बदबू का दूर होना।

दांत तथा दाढ़ के दर्द के लिये

५. तुख्म रवासन ४ माशे नरकचूर ४ माशे फिटकरी ४ माशे अफीम ४ रत्ती इनकी दो पोटली बनाना। १ पोटली दुखते दांत अथवा दाढ़ से दबाये रखना। २ घन्टे में आराम हो जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

स्वास्थ्य सम्बन्धी बाते

१. दांत पीले व खून निकलना—अखरोट के छिलके जलाकर बारीक करलो और दुगना समुन्द्र फेन और सैंधा नमक पोसकर मिला लो, नित्य इसका सेवन किया जायें।

२. दाद का इलाज—रालको बारीक पीसकर गोले के तेलमें मिला कर दाद पर लगाने से शीघ्र लाभ होगा।

३. स्वप्न दोष या धात का पतलापन—पहाड़ी गोखरू का चूर्ण प्रयोग करना।

४. अचानक चक्कर आना—गुलकन्द को दिन में २ बार दूध या पानी से लेना।

५. सिर दर्द—ताजे मठा में मुचकन्द के फूल पीसकर सर पर लेप करो सिर दर्द को लाभ होगा।

६. चेचक के दाग मिटाना—पीली सरसों, आंवला, सन्तरे के छिलके पानीं में पीसकर २ बार लेप करने से ठीक होंगे यह अनुभुति दवा है।

७. नेत्रों की दवा—नीम के फूल छाया में सुखालों और कलमी शोरा बराबर लेकर पीस लो छानकर शीशी में भर लो। रोंजाना नेत्र में लगाने से फूला, धून्ध, माड़ा इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं। नेत्रों की ज्योति बढ़ती है यह व्रद्धों करने बाला सिद्ध हुआ है।

८. कान का दर्द व पीव आना—सुखदर्शन के पत्ते का रस डाल कर गर्म गर्म रोटी से कान सेको शीघ्र लाभ होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घरेलू इलाज

कान का दर्द—आक के पीले पत्ते पर घी चुड़ कर, उसे आग पर थोडा सा गरम कर लें, फिर हथेली से मसल कर उसके रस की दो-तीन बूंदें दर्द वाले कान में डालें तो तुरन्त लाभ होगा।

घाव—नीम की पत्तियों को पानी में उबाल कर उस घाव को नित्य धोने से, घाव तुरन्त भर जाता है।

पुराने दस्त—साढ़े चार माशे रीठा को आधा पाव पानी में भिगो कर झाग उठायें, फिर उसे छान कर रोगी को पिलादें। इससे पुराने दस्त ठीक हो जाते हैं।

दमा—धतूरे के पत्तों को चिलम में रखकर तम्बाकू की तरह पीने से दमे का दौरा रुक जाता है।

आंख दुखना—बबूल के हरे पत्तों को रात के समय कूटकर टिकिया बनालें और उसे दुखती आंख के ऊपर रखकर पट्टी बांध दें तथा सो जायें। इससे प्रात: काल तक लाली दूर होकर, पीड़ा नष्ट हो जाती है।

पेट का दर्द—पीपल के दो पत्तों को पीस कर, गुड़ में मिलाकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

खूनी बवासीर—भोजन के बाद हरड़ को गुड़ के साथ खाने से खूनी बवासीर में पर्याप्त लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

❀ ४० वर्ष का अनुभवी चमत्कार ❀

[घर का वैद्य]

नाड़ी ज्ञान

हमारे देश में नाडी से रोग का निरीक्षण करने की चिकि पद्धति हजारों वर्षों से चली आ रही है। देश में सैकड़ों ऐसे वै और हकीम हैं जो रोगी से बिना बूछे उसके शरीर में व्याप्त तमा रोगों का पूरा वृतान्त बता देते ;। जिनको सुनकर रोगी औ उनके सम्बन्धी चकित रह जाते हैं। अब भी जब ग्राम में र वाला कोई रोगी किसी प्रसिद्ध डाक्टर के पास जाता हैं तो अप हाथ डाक्टर के सामने नाड़ी दिखाने के लिए आगे बढ़ा देता और चुप बैठ जाता है। जब डाक्टर उससे कुछ पूछता है तो कह देता है कि आप नाड़ी देख कर बतायें कि क्या रोग है कई क्रोध में आकर यह भी कह देते हैं कि यदि आप नाड़ी से रोग न बता सकते तो आप डाक्टर कैसे बन गये हैं।

नाड़ी को देखकर नाड़ी विशेषज्ञ रोगी के तमाम शारीरि विकारों और रोगों को बता सकता है और रोग का सही प लगाकर उसको उचित औषधि देकर उसको शीघ्र स्वस्थ क सकता है। रोगी से पूछे बिना जब चिकित्सक उसके रोगो वृतान्त बता देता है तो रोगी चकित हो जाता है और जब किसी सगे सम्बन्धी या किसी परिचित व्यक्ति से बातचीत कर है तो उस चिकित्सक की घन्टों प्रशंसा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाड़ी कब देखी जाये

(१) सुबह ७ बजे नाड़ी देखने का बहुत ही उचित समय है।

(२) रोगी पाखाना कर चुका हो परन्तु उसने कुछ न खाया हो तो उसको कुछ आराम कराने के पश्चात उसकी नाड़ी देखी जाये।

(३) औषधालय में रोगी आने के पश्चात उसको १०—१५ मिनट आराम कर लेने के पश्चात ही नाड़ी देखें।

(४) स्नान कर चुकने पर' काफी समय से भूखे मनुष्य, सख्त प्यास, लम्बे सफर के बाद भी नाड़ी से ठीक परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते।

(५) जब रोगी आराम कर रहा हो तो उसकी नाड़ी देखी जाये।

(६) रोते हुए रोगी, स्त्री भोग करने के बाद, भांग शराब पी चूकने पर, मिरगी, श्वांस रोग के दौरेके बाद, तैरने, दौड़ने के पश्चात नाड़ी नहीं देखनी चाहिए।

(७) पेट भरकर खाना खा लेने के बाद, दौड़ लगाने, व्यायाम करने के तुरन्त बाद नाड़ी न देखें।

(८) कई रोगी चिकित्सक को देखकर घबरा जाते हैं जिससे इसका प्रभाव रोगी के दिल और उसकी नाड़ी पर पडता हैं ऐसी अवस्था में उससे मीठी मीठी बातें करके उसको मित्र बनाकर उसकी घबराटह को दूर करने के बाद ही नाड़ी देखी जाये।

(९) क्रोध. जोश में होने और काफी दूर चल कर आने पर तुरन्त रोगी की नाड़ी न देखी जाये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सोकर उठते ही और भोजन कर चुकने पर नाड़ी न देखी जाये क्योंकि इन अवस्थाओं में हृदय की क्रिया में अन्दर आ जाने से नाड़ी की गति में भी अन्तर आ जाता है।

(११) सोते हुए को तुरन्त जगा कर उसकी नाड़ी देखना उचित नहीं।

वैद्यक मत से नाड़ी की पहचान

(१) अंगुटे के बराबर वाली पहली अंगुली के नीचे वायु की मुख्य नाड़ी चलती है।

(२) बीच की अंगुली के नीचे चलने वाली नाड़ी पित्त की कहलाती हैं।

(३) पिछली अंगुली के नीचे जो नाड़ी चलती है उसे कफ की नाड़ी कहते हैं।

पुरूष के दाहिने हाथ की ओर स्त्री के बांये हाथ की, अंगूठे के नीचे जड़ में) चलने वाली नाड़ी की परीक्षा की जाती है। नाड़ी देखते समय रोगी का हाथ अधर हो और हिलने न पाये। नाड़ी देखने में तीन अंगुलियों का प्रयोग किया जाता है।

स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी

स्वस्थ अवस्था में भी नाड़ी की चाल, उम्र, तापमान और गति के अनुसार घटती बढ़ती रहती हैं। नीचे नाड़ी की रफ्तार चलने से स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी लिखी जाती है। इसके विपरीत स्वस्थ व्यक्ति की नाड़ी रोगी मनुष्य की नाड़ी समझनी चाहिये।

स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी एक मिनट में ७२ से ७० वार चलती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१—गर्भ स्थिति बच्चे की नाड़ी एक मिनट में १३० से १५० बार तक चलती है।

२—जन्म के समय बच्चे की नाड़ी १३० से १४० तक प्रति मिनट चला करती है।

३—एक वर्ष के भीतर ११५ से १३० बार प्रति मिनट के हिसाब से नाड़ी की रफ्तार रहती है।

४—एक वर्ष से दो वर्ष तक के बच्चे की नाड़ी एक मिनट में १०० से ११५ बार तक चलती है।

५—दो से सात वर्ष तक की अवस्था में नाड़ी की रफ्तार ९० से १०० तक प्रति मिनट होती है।

६—सात से चौदह वर्ष की अवस्था में ८५ से ९० बार तक प्रति मिनट नाड़ी चलती है।

७—चौदह से इक्कीस वर्ष तक की अवस्था के नवयुवक की नाड़ी की प्रगति १ मिनट में ७५ से ८५ बार तक होती है।

८—इक्कीस से पैंसठ वर्ष तक की अवस्था में नाड़ी ६५ से ७५ बार तक प्रति मिनट के अनुपात से चलती है।

९—पैंसठ वर्ष के बाद नाड़ी की रफ्तार ७० से ७५ बार तक प्रति मिनट हो जाती है।

[मेंहदी से लाभ व प्रयोग]

भारतीय महिलाओं के लिए मेंहदी का प्रयोग प्रायः शृंगार प्रसाधन के रूप में होता है विवाह आदि मंगल-कृत्यों में इसका प्रयोग बहुतायत से होता है। इ[illegible] इसकी लुगदी से हथेलियां रंगी जाती हैं और उस पर तरह-तरह के डिजाइन बनाये जाते हैं जो स्त्रियों की कोमल कलाइयों और हथेलियों की सुन्दरता को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और भी बढ़ाने में सहायक होते हैं। किन्तु देखा जाय तो मेंहदी के प्रयोग से तरह तरह के रोग भी दूर किये जा सकते हैं और ये गुण मेंहदी की विशेष उपयोगिता के द्योतक हैं। नीचे मेंहदी के इसी प्रकार के प्रयोग दिये जाते हैं—

१—यदि गर्मी में सिर में दर्द होता हो तो मेंहदी के फूलों को सिरका में महीन पीस कर मस्तक पर लेप कर देने से सिर का दर्द दूर हो जाता है।

२—मेंहदी के फूलों को पानी में पीस कर लेप कर देने से भी सिर के दर्द में लाभ होता है।

३—रूई की जगह तकिया में मेंहदी के फूल भर देने से रोगी के सिरहाने रखने से अच्छी नींद आती है।

४—चोट लग जाने के कारण यदि सिर में चक्कर आता हो तो मेंहदी के सात माशा बीज पीस कर शहद मिला कर रोगी को चटा देने एवं शीघ्र ही गेहूं की रोटी के साथ गाय का घी तथा खांड मिलाकर खिला देने से सिर का चकराना दूर हो जाता है।

५—यदि मुंह में छाले पड़ गए हों तो मीठे पानी में मेंहदी की पत्तियों को भिगोदें। थोड़ी देर बाद पत्ती निकालकर इसी पानी से कुल्ला करने से मुंह के छाले दूर हो जाते हैं जाड़े के दिनों में पत्ती को पानी में उबाल कर कुल्ली करना चाहिए।

६—मेंहदी के पौधे की छाल को छाया में सुखाकर महीन पीस कर एक साफ शीशी में भर कर रखलें। आवश्यकता के समय तीन माशा ठन्डा पानी के साथ सेवन करने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

७—मेंहदी की महीन पीसी हुई छाल बीस तोला और नौसा- दर दोनों महीन पीस कर रखलें। प्रातः एवं सायंकाल तीन माशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गर्म पानी के साथ देने से तिल्ली की सूजन दूर होती हैं।

८–मेंहदी के पत्ते तीन माशा पानी में पीस कर छान कर थोड़ा सा कलमी शोरा मिला कर बिना हिलाए ही पिला देने से रूका हुआ पेशाब खुल जाता हैं। ठण्ड के दिनों में पानी को गुन-गुना करके पिलाना चाहिए।

९–मेंहदी की छाल को छाया में सुखा कर महीन-महीन पीस कर प्रातःकाल तीन माशा पानी के साथ खिला देने से पथरी रोग दूर हो जाता है।

१०—यदि शरीर के किसी भी अंग में काले दाग पड़ गए हों तो मेंहदी और साबुन बर बर–बराबर पीस कर लेप करते रहने से कुछ ही दिनों में काले दाग मिटने लगेंगे।

११--आग के जल जाने पर मेंहदी के पत्तों को थोड़े से पानी में पीस कर जले हुए स्थान पर लेप करने से आराम होता है।

१२–मेंहदी के पत्ती को पानी में भली-भांति उबाल कर इसी पानी की धार जले हुए स्थान पर डालने से शीघ्र ही लाभ होता है।

१३–यदि हाथ और पैर के तलुओं में जलन होती है तो मेंहदी के पत्तों को पानी में महीन पीस कर लेप कर देने से जलन दूर हो जाती है।

❋ आसान इलाज ❁

बन्द पेशाब--मक्का के भुट्टे के सुनहरी बाल २ तोला, एक पाक पानी में उबाले जब पानी १ छटांक रह जाय तो छान कर ठन्डा करके पिलाने से पेशाब खुलकर आता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

(१) पैदा होने वाले बच्चे को पेशाब न आये तो ६ माशा कलमी शोरा थोड़े पानी में घोल कर उसमें रूई भिगोकर बच्चे के मसाने यानी नाफ के नीचे रख दें पांच मिनठ में बच्चा पेशाब कर देगा ।

पेशाब में खून —दूब घास एक तोला, मिर्च दक्खनी ५ दाने १छटांक पानी में रगड़ छानकर दिन में १ बार ३–४ दिन पिलायें गर्म चीज का परहेज करें खून बन्द होगा ।

(२) अनार की चार कलियां ताजी १ छटांक पानी में रगड़ छानकर उसमें थोड़ी खांड भी मिला सकते हैं पियें ।

पीलिया पिन्डाल डोडा १ तोला, २ छटांक पानी में भिगो दें । जब पानी में फूलजाय तो इस पानी को नाक में चढ़ायें । ऐसा काफी देर तक नाक में चढ़ाते रहें । ऐसा करने से नाक मे आंखमे पीला पानी निकलेगा और पेशाब भी पीला आलेगा पिन्टाल डडे वाला पानी भी एक घूट पीलें । दूसरे दिन यरकान की बीमारी ठीक होगी यानी नाक में चढ़ाने से जुकाम हो जाता है मगर इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए ।

जिगर तिल्ली—घी ज्वार के पट्टे को चीरकर १ तोला नौसादर हुडया का बारीक करके उस पर डाल और चीनी की प्लेट में ऊंचा करके रखें इसमें जो रस डाल इमट्टा हो शीशी में भर लें । १ चम्मच सुबह, १ शाम थोड़े पानी में मिलाकर ४० दिन दें । खटाई और गर्म चीज का परहेज करें बहुत ही बढ़िया नुस्खा है । ये बड़े आदमी की खुराक का वजन है ।

खून बन्द—चोट लगने सेखून बन्द करने के लिए बर्फ रखें या रेशम का कपड़ा या रूई झलाकर इसकी राख जख्म में भर दें खून बन्द होगा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोट—चोट लगने पर सरसों के तेल में थोड़ी हल्दी पिसी हुई जलाकर रूई मे भिगोकर जख्म पर बांधें २— दिन में जख्म भर जायेगा। बरनौल मरहम लगायें जख्म भर जाता है।

सफेद दाग—ये नूस्खा सफेद दागों के लिए बहुत अच्छा है शुरू के दाग इससे ठीक हो सकते है। बावची ५ तोले अदरक का रस १० तोले में ८ दिन भीगो रक्खें इसके बाद सुखाकर बारीक करके बराबर का चीनी मिलायें २ माशा रोजाना सुबह ताजा पानी के साथ दिन में एक बार खिलायें और बावची का तेल बाजार से खरीदकर दागों पर लगायें ४ महीने में दाग दूर होंगे।

बालचर— काला सुरमा पीसकर लगाने से बालचर की बीमारी ठीक होती है काफी दिन लगायें। बाल उड़ जाने को बालचर कहते हैं।

दाद—गन्धक आमलासार, गूगल' सुहागा भुना हुआ, सबको बारीक करके नीबू के रस में गोलियां बनायें नींबू के रस में घिसकर दाद पर कुछ दिन लगायें। सुबह के वक्त लगाने से दाद ठीक हो जाती है।

छाजन—ढाक के बीज बारीक करके खट्टी दही में मिलाकर कुछ दिन लेप करें छाजन की बढ़िया दवा है।

कान बहना—ग्लेसरीन एक तोला में दो गोली सल्फाट्राइड पीसकर मिलाकर दो बूंद रोजाना कान साफ करके डालें। ८ दिन में कान बहना बन्द होगा।

आंख दुखना—गुलाब १ तोला अर्क में दो गोली सल्फा-याजीन खूब बारीक करके मिलायें और दिन में ७-८ बार ड्रापर से आंख में डालें। दुखती आंख दूसरे दिन बिल्कुल ठीक हो जायेगी। ये बहुत ह बढ़िया इलाज है। गोली स्टोर से लें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जाला फुला—नमक लाहौरी ६ माशे सुरमा काला ६ माशे सबको बारीक सलाई से रोजाना लगायें। धुन्ध जाले फूल को ठीक करेगा।

मोतियाबिन्द—नीम के फूल दरख्त से तोड़ो और डण्डी अलग करके फूलों को सुखाकर काली खरल में पीस लें उसमें कलमी शोरा बारीक करके बराबर का मिला लें। रोजाना रात को आंखों में बहुत दिन लगाते रहें। मोतियाबिन्द अगर पका न हो तो ठीक हो जायेगा।

गुहरी—खजूर को गुठली वा इमली के बीज पानी में घिस कर लगायें। गुहरी ठीक होगी ३-४ दिन लगायें। पेट खराब हो तो हल्काजुलाब लें।

नींद न आना—अगर ब्लड प्रैशर के मरीज को नींद न आये तो रात को सिरहाने मुट्ठी भर सोये रख दें।

रतौंदा—सफेद प्यास का रस, शहद, बराबर वजन मिलाकर कुछ दिन आंखों में लगायें। रात को न दीखने की बीमारी ठीक होगी।

बहरापन—लहसुन की १२ गिरी साफ करके चार तोले कड़वे बादाम के तेल में डालकर आग पर पखें। जब लहसुन जलकर काला हो जाय तो छानकर तेल शीशी में रखें दो बूंद रोजाना गर्म करके कई दिन तक कान में डालें बहरेपन के लिये बहुत अच्छी दवा है।

नाक के कीड़े—पुराने जूते का नीचे का चमड़ा जलाकर नसवार की तरह सूंघें कीड़े सब निकल जायेंगे।

अगर नाक वा कान में खुश्की हो जाय तो रोगन कद्दू दो बूंद नाक कान में डालें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंजन पायरिया—रीठे के छिलके जलाकर बारीक पीस कर कपड़ में छान लें और थोड़े सरसों के तेल में मिलाकर रोजाना दांतों पर मलकर गर्म पानी से धो लिया करें। एक महीने मलें पायरिया को फायदा करेगा।

योगी मंजन—तम्बाकू की राख २ तोले, काली मिर्च एक तोला बारीक करके रोजाना दांतों पर मलें। पायरिया के लिए बहुत बढ़िया महात्मा जी की बताई दवा है।

नजला जुकाम—तबाशीर असली ८ तोले, पीपल ४ तोला इलायची छोटी २ तोला दारचीनी १ तोला, कूजा मिश्री ६ तोले, सौंठ १ तोला, सबको बारीक करके रख लें। नये पुराने नजला जुकाम, खांसी के लिए बहुत अच्छी दवा हैं। ४ माशा सुबह ४ माशा रात को एक तोला शहद में मिलाकर कुछ दिन चटायें परहेज खटाई का करें।

पेट की गैस ब्लड प्रैशर —तबासीर, छोटी इलायची, सौंफ जीरा सफेद, धनिया बुरादा, सन्दल सफेद, कुजा मिश्री, सब २—२ तोला कुश्ता हकीक कुश्ता मरजान ४-४ माशा सब को बारीक करके मिला लें खुराक ४–४ माशे सुबह शाम ताजा पानी से खाये। इसके साथ ही दवा उलस्मिक हमदर्द की ४ माशे लिया करें। पेट की गैस दिल की घबराहट कब्ज भूख न लगना सबको ठीक करने की बहुत बढ़िया दवा है। ब्लड प्रैशर किसी का सख्त हो सिर्फ फक्की खिलायें बहुत जल्द फायदा करेगा। परहेज— बादी चीज ना खायें।

बवासीर—रीठे तवे पर रखकर ऊपर से ढक दें और नीचे आग जलायें जब बिलकुल जलकर कोयला हो जाय तब बारीक कर लें वजन जले हुए रीठे २ तोला' कत्था सफेद २ तोला, कुश्ता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

फौलाद ३ माशा सबको मिलाकर १—१ माशा सुबह शाम एक छटाँक मक्खन में रखकर दूध से खायं। खूनी और बादी बवासीर के लिए है। ऐसे मरीज जरुर इस्तेमाल करें और नीचे लिखे मरहम को बनाकर मस्सों पर लगायें।

मरहम बवासीर—वैसलीन ३ तोला, कपूर ६ माशा, सल्फा-ट्रायड दो गोली, बोरिक एसिड ६ माशा सबको बारिक वैसलीन में मिलायें और अंगुली से अच्छी तरह अन्दर करा टट्टी जाने से पहले और बाद में लगायें परहेज गर्म चीजों का ज़रूरी है।

शुगर—गुड़मार बुटी २ तोला, हल्द एक तोला, जामुन की गुठली १ तोला, बहेड़ा १ तोला सबको बारीक करके ३ माशे सुबह ३ माशा शाम पानी के साथ ८ दिन खायें। १५ दिन के बाद फिर ८ दिन खायें शुगर रूकेगी ये बीमारी जड़ से नहीं जाती यह दवा बहुत सस्ती है इन्जेक्शन नहीं लगवाने पड़ेंगे मीठे का परहेज करें।

शुगर टैस्ट करना—फिलिंग सिर्लोशन ए० बो० शीशे की टैस्ट टयूब में थोड़ा डालकर स्प्रीट को आग पर गर्म करें जब उबलने लगे तो इहमें ४ बूंद पेशाब डालें अगर सिलीकेन का रंग न पलटे तो शुगर नहीं हैं अगर रंग हरा हो जाय तो थोड़ी शुगर है अगर रंग खाकी हो जाय तो शुगर ज्यादा है।

चर्बी टैस्ट करना—पेशाब में चर्बी आने लगे तो आदमी के हाथ पांव पर सूजन आने लगती है ऐसे आदमी के लिये नमक खाना बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये। सुबह शाम घूमना चाहिये और चिकनाई बन्द कर देनी चाहिये शीशे की टैस्ट टयूब में मरीज का थोड़ा पेशाब डालकर स्प्रीट को आग पर गर्म करें। अगर पेशाब का रंग दूधिया हो जाये तो पेशाब में चर्बी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साफ कर लेना चाहिये हो सकता है कि इसमें कोई जहरीला कीड़ा हो और वह शर्बत के साथ आपके पेट में चला जाये और आपको नुकसान पहुंचे। नलकी न इस्तेमाल की जाये तो बेहतर है।

(७) हरा धनिया कूटकर उसका पानी निचोड़कर आधी छटांक पिलाने से उल्टी रूक जाती है।

(८) लोहे का छल्ला पहनने से नाखून के पास से उखड़ी खाल ठीक हो जाती है।

(९) मोर का पंख बच्चे के गले में बांधने से कहते हैं कि दांत चबाना बन्द होता है। सोते में बड़बड़ाना बन्द होता है।

(१०) होठ फट जाये तो बादाम ३–४ चबाकर खायें।

(११) दांत खट्टे हो जायें तो अखरोट या बादाम ३-४ चबाकर खालें।

(१२) हिचकी बन्द न हो रही हों तो पौदीने के दो पत्ते या नींबू चूस लें।

(१३) बारहसिंघे का सींग रात को पानी में पत्थर पर घिस कर सलाई से लगाने से नींद आ जाती है।

(१४) मीठा सोड़ा या लाहौरी नमक ६ माशा गर्म पानी के साथ खाने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

(१५) किसी चीज को पकड़कर रोजाना कुछ देर झूलने से कद लम्बा होता है। ये क्रिया काफी अरसा करनी होती है।

(१६) ऊंट के बाल रान के साथ बांधकर सोने से स्वप्नदोष रूक जाता है।

(१७) पीपल के पत्ते और नीम के पत्ते ताजे बारीक करके बवासीर के मस्सों पर लगाने से दर्द को अराम करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(१८) पीपल की ताजा दातुन रोजाना करने से दांत मजबूत होते हैं।

(१९) सरसों का तेल १ छटांक में एक तोला खाने का सोड़ा और ३ माशा कपूर मिलाकर ४–५ दिन रात को मालिश करें। खारिश दूर होगी।

(२०) एक साल पुराना आम के अचार का तेल लगाने से गंजापन ठीक होता है।

माहावारी नहीं-काढ़ा हैजा-डोडा कपास दो तोला गूदाअमलतास दो तोला, सौंफ, तुख्म गाजर सोया, गुलबनफशा सब एक–एक तोला, पुराना गुड़ तीन तोला पाव पानी में आग पर पकायें माहवारी खुलकर हो जायेगी गर्भवती को यह न पिलायें वर्ना गर्भ गिर जायेगा माहवारी का रूक-रुककर आना या दर्द से आना ठीक होगा।

आग से जलना—जिस्म का कोई हिस्सा जल जाय तो गोले का तेल १ छटांक गर्म करके १ तोला असली कपूर पीसकर मिलालें ये तेल ठण्डा करके दिन में ४-५ बार जली हुई जगह लगायें या जले हुए अंग को फौरन सरसों के तेल में या पानी में डुबोदें छाला नहीं पड़ेगा।

सीप—गन्धक आमलासार गूगर बराबर वजन करके, बारीक करके मिलायें जरुरत के मुताबिक बकरी के दूध में मिलाकर रात को सीप वाली जगह पर लेप कर दें। कुछ ही दिनों में दाग खत्म हो जायेंगे नींबू का छिलका ताजी पानी में घिसकर लेप करने से कुछ ही दिन में दाग दूर हो जायेंगे।

बाल गिरना बन्द—अमर बेल बूटी एक पाव ३ सेर पानी में रोजाना रात को उबालें। पानी आधा रह जाय तो उस पानी से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—लहसुन के पोट के छिलके को पानी के साथ बारीक पीसकर स्तन पर लेप करे। सुरखी और सूजन गायब हो जायेगी।

३—सताबार को महीन पीस कर सेवन करने से दूध बढ़ जाता है।

४—१५ दिन तक पानी के साथ अनार की छाल को पीस कर लेप करने से स्तन सख्त हो जाते हैं।

५—सरसों की खली को पानी में पीस कर लेप करने से स्तन रोग दूर होता है।

उदर चिकित्सा

(पेचिस का इलाज)

१—साफ चूने के ऊपर का १ छटांक पानी निथार लो उसमें एक तोला गर्म घी मिलाकर पीलें। पेचिस शर्तियन दूर हो जायेगी

२—एक तोला ईसबगोल पानी के साथ खीर की तरह मिश्री डालकर पकाकर खावें। पेचिस ठीक हो जायेगी।

३—पांच मासे प्याज लेकर आध पाव पानी में पकावें और थोड़ा सा गुड़ या शक्कर डालकर पीलें, पेचिस दूर हो जायेगी।

बवासीर की औषधि

१—कुकरौंधे का १ सेर रस निचोड़ कर इतना पकावें कि वह काफी गाढ़ा हो जाय तब उसको काली मिर्च के बराबर गोली बनाकर सुबह शाम खावे, इससे बवासीर दूर हो जायेगी।

२—मट्ठा (छाछ) में सेंधा नमक डालकर पीने से १०–१५ दिन में आराम हो जाता है।

३—नारियल की जटा जलाकर उसकी राख में उसी के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बराबर लाल शक्कर मिलालें। पानी के साथ १ तोला सुबह खायें और इसी राख को दिन दो तीन बार मस्सों में लगावे बीस दिन के अन्दर हर प्रकार की बवासीर दूर हो जायेगी।

पेट के साफ करने की औषधि

१—रेंडी (अरन्डो) के पत्ते को मसल कर उसका अर्क निकाल लें और उसे गुदा द्वार पर लगावे इससे कीड़े मर जायेंगे।

२—नीम का तेल गुदा द्वार पर लगायें यह भी अजमाई हुई दवा है।

पेट का वायुगोला

१—रूसे की पीली पत्तियों को तवे पर सेक कर कपड़े द्वारा पेट पर बांध दे। इससे बहुत जल्दी आराम होता है।

२—रेणका (रेत) की पोटली बनाकर गरम तवे पर रख दे। जब पोटली गरम हो जाय तो उससे पेट को सेक दे। इससे पेट की हवा खारिज होगी और तुरन्त आराम होगा।

३—अजवाइन, जीरा और नमक पीसकर फांके और नाक पर हींग का फोया लगावे इससे शीघ्र आराम होता है।

४—सुबह के वक्त ६ मांसे अन्डी का तेल पीने से दस्त साफ होकर वायुगोला समाप्त हो जाता है।

५—सनाय काला नमक व पीला हड़ समान मात्रा में कूट छान कर सोते समय गर्म पानी से खालें। इससे अवश्य लाभ होगा।

६—बेर के बराबर गुड़ लेकर उसमें अल्प मात्रा में खाने का चूना रखकर गोली बनावे। इसके खाने से रोगी को अति शीघ्र लाभ होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

संग्रहणी (इसहाल) की औषधि

१—असगन्धा हल्दी को बारीक पीसकर नाक के चारों तरफ इस तरह लगा दे कि दीवार सी बन जाय। फिर आदि का अर्क निकाल कर उसमें भरदें इससे हर किस्म के पतले दस्त को लाभ होता है।

२—पका हुआ पपीता अथवा कच्चे पपीत की भाजी लगातार खाते रहने से संग्रहणी जाती रहती है।

३—बरगद का दूध नाभि स्थान में भरने से हर प्रकार के संग्रहणी रोग को शर्तिया फायदा होता है।

तिल्ली रोग की चिकित्सा

(पहचान—हाथ पैर सूख जाते हैं तथा पेट की उल्टी तरफ सूजन आ जाती है और कड़ा हो जाता है)

१—छः माशा भाऊ के पत्ते को पीसकर शक्कर के साथ खाने से शर्तिया फायदा होता है।

२—तिल्ली के ऊपर ओले बंधने से दो तीन दिन में अवश्य लाभ होता है।

३—बथुवे का साग बनाकर जिसमें मिर्च मसाला न पड़ा हो एक हफ्ते तक इस्तेमाल करने से तिल्ली को अवश्य लाभ होगा।

४—खाली पेट मूली पत्ती सहित तथा काला नमक खाना तिल्ली के लिए लाभप्रद है।

५—चार मासे सज्जी गुड़ में मिलाकर बीस दिन खिलावे। यदि अन्य औषधियों से लाभ न हो तो इससे अवश्य लाभ होगा।

६—नौसादर और चूना समान मात्रा में मिलाकर ओस में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रख दें वह सुबह तेल की शकल में हो जायेगा। इसे बन्द शीशी में रक्खें और बताशे में एक बूंद डालकर प्रति दिन खाते रहें इससे तिल्ली का रोग ठीक हो जायेगा।

अन्य रोगों की चिकित्सा

लकवा रोग की औषधि

(पहचान—इस रोग में मुंह का एक हिस्सा टेढ़ा पड़ जाता है तथा जवान का जायका बदल जाता है। साफ आवाज नहीं निकल पाती।)

१—सन का बीज पीसकर शहद के साथ खिलाने से दस–पन्द्रह दिनों में आराम हो जाता है।

२– शाम के वक्त उड़द की दाल पानी में भिगों दो। सुबह उसके छिलके निकाल कर, नमक, मिर्च मसाला मिला कर दो तोले के मंगौड़ घी में तलकर ४-६ दिन खाले इससे लकवे का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

३—बीरबहोटी सुखाकर उसके पांवदूर करके एक बीरबहोटी पान के साथ थोड़े दिन तक खाते रहने से लकवा जाता रहता है।

अधांग (फालिज रोग की चिसित्सा)

(पहचान—इस बीमारी में शरीर का अङ्ग निष्क्रिय और शून्य सा हो जाता है। शरीर का हिलता डुलना मुश्किल हो जाता है।)

१—सांभर की पोटली बनाकर सेकने से बहुत जल्द आराम होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—शरीर के जिस अंग पर फालिस गिरी हो उस पर खजूर का गदा मलने से फालिस दूर हो जाती है।

३—लकवा फालिस के लिए तिल्ली का कच्चा तेल पिलाना जब तक कि मरीज तेल को पहचान न सके, शर्तिया दवा है। क्योंकि पहचान लेने से मरीज को दवा में अविश्वास हो जायेगा। यह मनोवैज्ञानिक कारण है।

गश अथवा मूर्छा की औषधि

(पहचान—इस मर्ज में रोगी अचेत सा हो जाता है।)

रोगी के सिर के बाल बनवा कर छः माशे बचनाग गऊ के मूत्र में मिलाकर सिर पर शीघ मालिश करे। इससे तुरन्त होश मे आ जावेगा।

सुजाक रोग की औषधि

(पहचान—इस मर्ज में पेशाब की नली में घाव हो जाते हैं, पेशाव करते वक्त जलन महसूस होता है। शुरू में खून और बाद में पीव गिरने लगती है।)

१—तरबूजे के फल में लिंग रखकर पेशाव करने से सोखाक जड़ से जाता रहता है।

२—एक तोला कुलफे (नोंनिया) के बीज को पाव भर पानी में पीसकर तीन तोला शहद मिलाकर दोनों वक्त पीवे उससे सुजाक ठीक हो जाता है। काली मिर्च बिलकुल ना खाये।

३—एक सेर मेंहदी के पत्ते का अर्क निकाल कर उसमें छः माशे कत्था मिलावे और दिन में छः सात बार उसकी पिचकारी करे। इस औषधि से उसी दिन लाभ होना चाहिए यदि इसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ नीला थोथा भूनकर और मिला दिया जाय तो और भी शीघ्र लाभ होगा।

४—यदि सोजाक होता हुआ प्रतीत हो तो चार दिन तक निराहार रहे। इससे मर्ज जाता रहेगा।

आतशक रोग की चिकित्सा

(पहचान—इस मर्ज में पेशाब के स्थान पर फुन्सियां हो जाती हैं और सारे शरीर में दाद की तरह चकत्ते पड़ जाते हैं, मुंह में छाले पड़ जाते हैं और बहुत जलन होती है।)

१—एक तोला नीम का हरा पत्ता भंग की तरह घोंट कर एक पाव पानी में मिलाकर छान लें और दो तोले शहद तथा छः माशे चोप चीना बारीक पीसकर फांक ले ऊपर से वही पानी पी ले। इसी प्रकार यह दवा पीते रहने से बीस दिन में रोग समूल नष्ट हो जायेगा। खटाई तथा तेल की चीजें वर्जित हैं।

२—रीठे जिससे कपड़े धोये जाते हैं उसका छिलका उतार कर धूप में सुखा ले फिर बारीक पीसकर कपड़छान करले और पानी में छानकर मसूर के बराबर गोलियां बना ले। प्रातःकाल एक गोली निगल कर थोड़ा पानी पी ले। इससे शीघ्र आराम होगा। खाने को घी दूध आदि दे सकते हैं। नमक, मिर्च बिलकुल छोड़ दे।

पीलिया रोग कम्बलाओं की औषधि

(पहचान—इसमें सारे शरीर का रंग पीला पड़ जाता है तथा आंखे और नाखून भी पीले पड़ जाते हैं।)

१—कड़वी तुरई पानी में पीसकर नाक में बहुत थोड़ी फूंके शर्तिया इलाज है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—पांच तोला मूली के पत्तो का अर्क निचोड़ कर एक तोला मिश्री मिलावें और बासी मुंह पीवें यह पीलिया के लिए राम बांण औषधि है। इससे एक हफ्ते के अन्दर पीलिया दूर हो जाता है। किन्तु दो माह तक हल्दी और दूध नहीं खाना चाहिए।

३—खट्टे अनार का रस आंखों में लगाने से तीन दिन के अन्दर पीलया रोग दूर होता है।

४—कड़ुवा तेल आंखों में लगाने से एक हफ्ते के अन्दर आंखों का पीलापन दूर हो जाता है।

५—जहां तक हो सके कच्चे पपीते को बिना मिर्च मसाले की सब्जो तथा पका हुआ पपीता खाये इससे पोलिया रोग को शर्तिया लाभ होगा।

सिर दर्द औषधि

१—थोड़ा थोड़ा धतूरे का बीज लेकर चबाता और थूकता जाय इससे पन्द्रह वर्ष तक का पुराना दर्द भी ठीक हो जाता है।

२—बिनौले की मिंगी पीसकर लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

३—चावलों को तीन बार दूध में भिगोकर और सुखाकर बारीक पीस ले और थोड़ा लेकर सूंघे इससे आधा सीसी का दर्द भी शीघ्र दूर हो जाता है।

आधा सीसी

१—एक छटांक बूरा या खांड का एक गिलास शर्बत बनाकर सूर्योदय के पूर्व पिये इससे बहुत जल्द आराम होगा।

२—जमाल गोटे की मींगी घिसकर लगाने से आधा सींसी को तत्काल आराम होता है। मगर कभी कभी फुन्सियां निकल आतीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्म अथवा घाव की औषधि

१—घाव के ऊपर सुहागा पीसकर बुरकने से लहु का बहना बन्द हो जाता है और घाव को फायदा होता है।

२—घाव के ऊपर प्रति दिन पेजाब करते रहने से घाव शीघ्र सूख जाता है।

३—हल्दी जलाकर उसकी राख को कड़ुवे तेल में मिला कर लगाने से घाव जल्द ठीक हो जाता है।

४—घाव के ऊपर गुड़ बांधने से पीव निकल जाती है और घाव सूख जाता है।

५—हरी दूब या पत्थर या बाल अथवा बांस के ऊपर का बारीक छिलका पीसकर लगाने से खून तुरन्त बन्द हो जाता है।

६—सिरसे को छाल बारीक पीसकर घाव पर लगाने से जल्द आराम हो जाता है।

७—प्याज और तम्बाकू तिली के तेल में जलालें और थोड़ा सा मोम मिला कर घाव में लगायें विषैले हथियार का घाव भी ठीक होता है।

* बड़े फोड़े (दुम्बल) का उपचार *

१—घी में नीम के पत्ते को पकाकर बांधने से असाध्य दुम्बल भी ठीक हो जाता है।

२—खाने की तम्बाकू गरम पानी में पीसकर सूजन पर बांधने से फोड़ा फूट जता है और पीव साफ हो जाती है।

३—सूजन के ऊपर सिरस के पत्ते गर्म करके बांधने से शीघ्र आराम होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४—यदि फोड़े को शीघ्र फोड़ना हो तो पीपल की छाल पीसकर गुनगुना करके लगावें। इससे शीघ्र फूटकर सूख जायेगा

आंखों की बीमारियों की औषधि

१—कम दिखाई पड़ना—हड़ की मिंगी घिसकर आंखों में लगावें, इससे दृष्टि तीव्र होगी।

२—शहद के साथ प्याज का रस मिलाकर रात्रि में आंखों में लगायें अथवा केवल प्याज का रस डालें, इससे आंखों की कमजोरी दूर हो जायेगी।

३—सुबह उठकर बासी मुंह आंखों में थूक लगायें। इससे आंखों की कमजोरी दूर हो जाती है। किन्तु यदि जर्दा तम्बाकू खाकर सोया हो तो ऐसा नहीं करना चाहिये।

४—जिस आंख में दर्द हो उसके उल्टी तरफ पांव के नाखून में आक का दूध भरें इससे शीघ्र आराम होगा।

* नेत्रों की सुर्खी *

१—जिस आंख में सुर्खी हो अथवा दुखती हो उसके तरफ के पांव के अंगूठे के नाखून में आक के दूध का लेप करे। दोनों आंखों में दर्द हो तो दोनों तरफ के नाखूनों में लगायें। इससे तुरन्त आराम हो जायेगा।

२—गुलाब में कच्ची फिटकरी मिला कर आंखों में लगाने से आंखों की सुर्खी और दर्द दोनों ही दूर हो जाता हैं।

३—बबूलकी पकी हुई फली का रस आंखों में लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

परवाल रोग की चिकित्सा

पहचान—नेत्रों के पलकों में बाल निकल आते हैं जो पलक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्द करने खोलने में कष्ट देते हैं।

१—पहले बारीक नोचने से बालों को उखाड़लें फिर नौसादर क. डली की किसी पत्थर पर घिस कर चिकनी बना लें और उसे पलकों में लगायें। इस प्रकार दो तीन बार लगाने से दुबारा बाल नहीं जमेंगे।

२—पहले बालों को उखाड़ लें और उस स्थान पर घोड़े की दूम की राख लगाय इससे परबाल जरूर अच्छा हो ज येगा।

बाहम्नी रोग का निदान

(पहचान—इसमें पलक गिर जाते हैं और आंखों के पपोंटों में खुजलाहट होतीं है और जख्म हो जाता है।)

१—छुवारे की गुठलों कों आग में जला डालें और बारीक सुरमे की तरह खरल करे। आंखों में लगाने से बाल जम आवेंगे और पलक ठीक हो जायेगीं।

२—आके के दूध में रूई की बत्ती बना कर सुखा डालें और तिल के तेल में उस बत्ती को जलाकर उसका काजल निकाल कर आंखों में लगावें। इससे बारम्नी का रोग बहुत जल्दी ठीक हो जाता है।

रतौंधी रोग की औषधि

(पहचान इस रोग में रात्रि के समय में बहुत कम दिखाई देता या बिल्कुल ही नहीं दिखाई देता और दिन में दिखाई देता है।)

१—पांच तोला सिरस का बीज बारीक पीसकर आटे के साथ मिलाकर रोटीं पकाकर तीन-चार दिन खाने से रतौंधीं जाती रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—सफेद शक्कर के बताशे को बारीक तथा सफाई के साथ पीस कर आंखों में भरें तुरन्त फायदा होता है।

३—सिरस व संभालू के पत्ते का अर्क तीन चार बूंद आंखों में डालें। यह रतौंधी की अजमाई दवा है।

आँखों के जाला फूला नखूना तथा गुहेरी रोगों की औषधि

(पहिचान—फूला आंखों के पुतली के ऊपर सफेद झिल्ली सी पड़ जाती है। नाखूना-आंखों के कोये की तरफ लाल रंग का मांस का हिस्सा बढ़ जाता है। इससे आंख को तकलीफ भी होती है। गुहेरी-आंख की कोर मेंछोटी फुन्सियां निकल आती हैं।)

१—सूरज के सामने कनखी उंगली को हथेली पर इतना घिसें कि उस में गरमी आ जाये फिर उस उंगली को गुहेरी पर रक्खें। यह क्रिया कई बार करने से गुहेरी दूर हो जाती है।

२—लौंग अथवा छुआरे के बीज अथवा केसर घिस कर लगाने से गुहेरी जाती रहती है।

३—बारीक नौसादर खरल करके लगाने से सफेदी जाती रहती है और आंखों को साफ दिखाई पड़ने लगता है।

४—हल्दी को बारीक पीसकर नीबू के रस में बारह घन्टे खरल करें। इससे आंखों के फूला, जाला, माड़ा इत्यादि हर रोग दूर होते हैं। यह उपरोक्त रोगों की अचूक दवा है।

५—लाहौरी नमक की सलाई आंखों में तीन बार प्रति दिन लगाने से फूला और जाला जाता रहता है।

६—इमली का बीज थोड़े से पानी में घिसकर लगाना गुहेरी के लिये अच्छी दवा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

※ आंखों के मोतियाबन्द रोग की औषधि ※

(पहचान—इस रोग में आंखें बिल्कुल अन्धी हो जाती हैं किन्तु पुतलियां बिलकुल स्वच्छ रहती हैं।)

१—शहद में प्याज का अर्क मिलाकर लगाने से बहुत लाभ होता है।

२—कांसे के कटोरे में इमली के पत्तों का एक छटांक रस नीम की लकड़ी जिसमें तांबे का पैसा लगा हो उसमें घोटें। तत्पश्चात लड़के वाली औरत के दूध में चालीस बार खरल करके आंखों में लगावें। इससे अवश्य लाभ होगा।

※ सन्निपात रोग की चिकित्सा ※

[पहचान—हल्लका बुखार, सिर में दर्द और भारीपन महसूस होता है तथा दिमाग बहक जाता है।]

१—मूंग के दानों को बारीक पीसकर बकरी के दूध में गूंथ कर रोटी बनावें और उसे तवे पर एक तरफ ही सेकें। जिस तरफ रोटी कच्ची हो उस तरफ सिरका और रोगनेगल लगाकर सिर पर बांध दें। एक घन्टे के बाद रोटी बदल कर दूसरी बांधते रहें। इस प्रकार तीन चार बार करने से सन्निपात जाता रहेगा।

※ नींद लाने की औषधि ※

१—यदि नींद न आती हो तो पोई का साग बनाकर खिलावें इससे नींद अवश्य आ जायेगी।

२—हाथ और पैरों में बकरी का दूध मलने से नींद अवश्य आयेगी।

※ मिरगी रोग का निदान ※

१—जिस बच्चे को मिरगी आती हो उसके दोनों भौंहों के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीच में बकरी की मेगनी जलाकर या मूंग गरम करके दाग दे। इससे हमेशा के लिए दौरा खत्म हो जायगा।

२—सिरसे का बीज बारीक पीसकर रोगी को सुंघ वें। इससे छींक आवेगी और आराम हो जाएगा।

* प्रमेह (जरियान) रोग की दवा *

[पहचान–पेशाव में पहले अथवा बाद में धात निकलना]

१—सुबह उठकर बताशे के अन्दर बरगद का दूध भर कर खावें और एक बताशा रोज बढ़ते जायें। इस प्रकार सात दिन में धात गाढ़ी हो जाती है।

२—ठण्डे पानी में छः माशे चीनी तथा एक तोला ढाक (पलास) का फूल पीसकर पियें इससे हर प्रकार के धात रोग को अवश्य लाभ होता है।

३—बबूल की कोपल, छाल, गोंद और फल बराबर मात्रा में पीस कर खाना रामवाण दवा है।

४—मिश्री और सिरस का बीज बराबर मात्रा में पीसकर छः माशे लेकर दूध के साथ खाने से धात गाढ़ी हो जाती है।

५—सात दाने काली मिर्च एक तोला घुंघची का पत्ता तथा शक्कर दो तोला पीसकर सात दिन तक खावे इससे पानी की तरह धात गाढ़ी हो जाती है।

६—रजस्वला स्त्री के प्रसंग से यदि धात खराब हो तो रेवन चीनी बारीक पीसकर छः माशे सुबह गाय के दूध के साथ सेवन करे इससे तीन चार दिन के अन्दर आराम हो जायेगा।

७—बड़ की कोपल नौ माशे अथवा बड़ का फल दो तोला पीसकर प्रतिदिन खावे इससे धात गाढ़ी हो जायेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* नाभि का अपने स्थान से हट जाना *

१—दो तोला सौंप गुड़ के साथ मिलाकर खाने से ठीक हो जाता है।

खटमलों को दूर करना

१—गर्म पानी में फिटकर घोलकर चारपाई में डालने से खटमल दूर हो जाते हैं।

२—मिट्टी के तेल की बू से खटमल भाग जाते हैं।

* पथरी अथवा दर्द गुर्दा *

[पहचान—इसमें पेशाव में जलन होती है तथा बूंद-बूंद टपक कर आती है कभी-कभी खून आता है और कमर में दर्द होता है।]

१—अरण्ड का बीज छीलकर उसे इस प्रकार भूनें कि वह लाल हो जाय और सुबह शाम एक बीज थोड़े दूध के साथ खायें इससे पन्द्रह दिन में दर्द हमेशा के लिये गायब हो जायेगा।

२—इसकें लिये सूरजमुखी के पत्तों का अर्क निकाल कर पीना भी बहुत लाभदायक है।

३—शाम के वक्त पानी ढक कर रख लें और सुबह बासी मुंह पीकर थोड़ी देर में टट्टी जाये। इससे पेशाब साफ आयेगा और आराम हो जायेगा।

* पेशाब बन्द होना *

१—किसी बर्तन में गुनगुनापानी भरें और उसमें नंगे बैठ जायें पेशाब अवश्य खुल जायेगा।

२—लिंग की सुराख में तेल रखने से पेशाव खुलकर आता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३— नाभी में राख की एक डली रखकर दो बूंद पानी डालें कुछ देर में पेशाब खुल जायेगा।

* कमजोरी की दवा *

१—शहद या पानी में हींग घिसकर नाभी स्थान में लेप करने से लाभ होता है एक रत्ती हींग प्रतिदिन सेवन करना भी निहायत फायदे मन्द है।

२—प्रसग के पश्चात एक तोला गुड़ खाने से ताकत क्षीण नहीं होती।

३—कडवा तेल और आक का दूध बराबर मात्रा में लेकर चार पहर घोटकर लगायें। इससे बहुत लाभ होगा।

छपकली का जहर

१—कटी हुई जगह पर सरसों के तेल में राख मिला कर लगायें। इससे छपकली का विष जाता रहेगा।

२—केशर की खशबू से छिपकली भाग जाती है। अत: कमरे में केशर रखना चाहिए।

बन्दर का जहर दूर करना

१—बन्दर के काटे हुए घाव पर शहद और प्याज पीसकर लेप करें। इससे जहर निकलकर घाव सूख जायेगा।

२—जहां बन्दर ने काटा हो वहां बन्दर की बीट लगाना लाभकारी है।

* भगन्दर *

[पहचान—गुदा द्वार पर जख्म हो जाता है और उससे पीले रंग का द्रव्य निकलने लगता है।]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१—बड का दूध कागज में लगकर घाव पर चिपका दें इस से भगन्दर ठीक हो जायेगी ।

२—नीम के पत्तों की लुगी सुराख पर बांधने से मवाद खींचकर ठीक कर देता है ।

३—जमाल घोटा की मिर्गी घिसकर लगावें इससे फोड़ा बहुत जल्द फूट जायेगा ।

※ हाथी पांव (फलिया) रोग का निदान ※

[पहचान—इस रोग में काफी सूजन आ जाती है । पांव हाथी के पांव की तरह मोटा हो जाता हैं ।]

१—आक (मदार) का सूखा दूध इसके लिए बहुत लाभदायक औषधि है ।

२—पहले रोगी को जुलाब देकर दस्त करायें उसके बाद काले धतूरे का एक दाना पानी के साथ रोगी को दें । इस प्रकार एक-दो दाना रोज बढ़ाकर बीस तक पहुंचायें । इससे यह रोग अवश्य ठीक हो जायेगा ।

※ छाजन रोग की दाया ※

(पहचान यह एक प्रकार की दाद हैं जिसमें बदन में चित्तियां पड़ जाती हैं । और खुजलाहट होती है ।)

१—सत्यानासी की जड़ पानी के साथ पिसकर लगावें इससे अन्य प्रकार का चर्म रोग भी दूर होता है ।

२—कैथे प्रथम आग में भूनकर उसका गूदा निकाल लें और उसे रात के समय मलकर सो जायें सुबह गर्म पानी से जिसमें नीम की पत्ती उबाली हों स्नान कर लें । इस प्रकार दो एक रोज करने से छाजन, दाद, अथवा अन्य चर्म रोग जाते रहेंगे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३—नीम की खली पानी में भिगो कर छाजन पर लगाकर दो तीन घन्टे बाद नहा डालें। इससे छाजन जाती रहेगी।

४—सरसों के तेल में लाल मिर्च और खुरसानी अजवाईन पकाकर लगावें इससे खुजली को जल्द फायदा होगा।

५—यदि खुजला अथा एग्जिमा की वजह से उंगलियों में सूजन आगई हो तो गहूं का चोकर और नमक पानी में ओटाकर इस पानी में उंगलियो को धोवें। इससे शीघ्र आराम होगा।

※ दद्रु की रोग चिकित्सा ※

१—दाद के ऊपर तीन चार दिन तक दूधी का दूध लगायें इससे दाद खत्म हो जायेगा।

२—लोहे के बर्तन में सुहागे को भुन कर पीसकर घी में मिलाकर लगावें उससे दाद जाती रहेगी।

३—मदार (आक) का दूध लगाने से दाद बहुत जल्द साफ हो जाती है।

४—यदि दाद किसो तरह से न जाता हो तो लहसुन को पीस कर दाद के ऊपर हल्का लेप करे ताकि फफोले पड़ें, इससे दाद जल जायेंगी।

※ रान और बगल की गिल्टी ※

१—नीबू के रस में कुचले को पिसकर लेप करने से बगल की गिल्टी जाती रहती है।

२—गौमूत्र में प्याज पिसकर पकावें और उसकी टिकरी बनाकर बांधें। इससे दोनों प्रकार की गिल्टियां ठीक हो जाती हैं।

३—बगल की गिल्टी आकाश बेल को उबालकर भपारा देने से और बगल में बांधने से ठीक हो जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४—रूई में बरगद का दूध टपकाकर फोया बनाकर बगल की गिल्टी में लगावे। और फोया बदलता रहे इससे शीघ्र फायदा होता है।

५—छोटी कटारी का फल पीसकर गर्म करके पान पर रखकर बांध दें तो गिल्टी बैठ जायेंगी या फूट कर वह जायेंगी और जल्द आराम हो जायेगा इसे दिन में दो तीन बार बांधना चाहिये।

※ पित्ती रोग चिकित्सा ※

(पहचान—इस रोग में बदन में मामूली सी सूजन और खुजली होती है।)

१—पानी में नमक गर्म करके मलने से लाभ होता हैं।

२—सरसों के तेल पाना का तेल या निबौली जलाकर उस तेल की मालिश करने से अवश्य फायदा होगा।

※ नाराव (नहरवा रोग) की चिकित्सा ※

(पहचान—यह रोग अधिकतर नाभी के बीच में और पांव में होता है। इससे पहले छोटी फुन्सो सी निकलती है और जलन होती है। और बाद में डोरे निकलने लगते हैं।

१—आक के दूध में नमक डालकर बांधने से पीव निकल जाती है और आराम हो जाता है। बेर के पत्ते पीसकर लगाने से घाव साफ हो जाता है।

२—चौलाई की टिकिया बनाकर बांधना और साग बनाकर खाना इसके लिये बहुत लाभदायक है।

३—दूध में आक की जड़ डालकर औटा लें फिर उसका दही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमा कर घी निकालें और उसे चावल के साथ खायें इससे कभी नहरवा नहीं होगा।

४—तालाब या दरिया के घोघे दस माशा लेकर उसमें दस माशा गुड़ मिलाकर बारीक पीस डालें और उसकी तीन गोलियां बनाकर एक गोली रोज खायें। इससे तीन चार दिन में नहरवा जाता रहेगा।

❋ आग से जलना ❋

१—गाय के घी में इमली की छाल जलाकर मिलालें और जले पर लगावें इससे जलन फौरन शान्त हो जाती है।

२—गाय की दही में बड़ की पीपली पीसकर लेप करें इससे तुरन्त आराम होगा।

३—आलू का रस जले पर लगायें इससे जलन शान्त हो जायेगी और अति शीघ्र आराम होगा।

४—जले हुये स्थान को सेककर उसपर पुरानी रूई सेक कर बांध दें। इससे जलन शान्त होगी और फफोले नहीं पड़ेंगे।

५—यदि बारूद से जला हो तो राख महीन पीसकर मीठे तेल में गर्म करके खूब मिलाकर सात बार पानी में धोकर लगावें इससे जलन फौरन शान्त होगी और शीघ्र ठीक होगा।

६—पानी के घड़ों की काई छुड़ाकर लगाने से जलन शान्त होती है और छाले नहीं पड़ते।

❋ मोच–धूस और चोट की रामवाण औषधियां ❋

१—गुवार पाटे (हाथी चिघाड़) के पत्ते को आधा चीरकर उस पर पीसी हल्दी बुरक कर आग पर गर्म कर के चोटपर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

बांध दें। इसमे सूजन और दर्द जाता रहेगा।

२—साफ मिट्टी को खूब गरम कर उसपर पानी डालकर सेकने से अथबा गम पानी की धार डालने से चोट और मोच को फायदा होता है।

३—खाण्ड और नमक ६-६ माशे मिलाकर खाने से चोट और मोच को आराम होगा।

४—पांच माशा बारीक पीसी हुई मेंहदी की पत्ती, दो तोले तिली के तेल में पका कर लेप करे और कण्डे की आग से सेकें। इससे चोट और मोच को फायदा होगा।

५—चोट या वादी के दर्द में प्याज का रस गर्म करके पन्द्रह बीस मिनट तक मले इससे आराम होगा।

* कांटा लगना *

१—छः माशा नमक पीसकर एक माशा तिली के तेल में मिला दें। और जहां कांटा लगा हो सुई से कुरेद कर फाये को तर करके रख दें। इससे कांटा अपने आप निकल जायेगा।

२—कांटे की जगह को कुरेद कर उसमें आक का दूध लगा दे इससे कांटा निकल जाता है।

३—कांटा निकाल कर उस जगह को अच्छी तरह दवा कर खून निकाल दें वर्ना पक जायेगा।

४—यदि कांटा निकल रहा हो तो उसपर गुड़ मिली हुई तम्बाकू बांधे इससे कांटा ऊपर आ जायेगा।

* बाल तोड़ की दवा *

१—पान के पत्ते पर घी लगाकर गर्म करके बालतोड़ पर बांध दें इससे बालतोड़ ठीक हो जायेंगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—भीगे हुये चुने में गेरु घिसकर गर्म करके बालतोड़ पर लगाने से अच्छा हो जाता है।

३—गेहूं के पन्द्रह बीस दाने दांतों से चबाकर बालतोड़ पर लगाने से आराम हो जायेगा।

४—यदि उसमें पीव आ गया हो तो नीम की पत्ती में काली मिर्च पीसकर लगावें। इससे बह जायेगा। और बालतोड़ सूख जाएगा।

॥ जोड़ों के दर्द को दूर करने की दवा ॥

१—कनेर की पत्ती उबाल कर पीस लें और मीठे तेल में मिलाकर लेप करे, इससे दर्द जाता रहेगा।

२—लहसुन पीसकर लगाने से बदन के हर अंग का दर्द जाता रहता है किन्तु इसे जल्दी हटा देना चाहिए। नहीं तो फफोले पड़ने का भय रहता है।

३—राई के लेप करने से हर प्रकार का दर्द जाता रहता है।

४—कड़वे तेल में अजवाईन और लहसुन जलाकर उस तेल का मालिस करने से हर प्रकार का बदन का दर्द दूर हो जाता है।

मस्सा दूर करने की दवा

१—मस्से को घोड़े की पूंछ के बाल स बांध दें इससे मस्सा कटकर खत्म हो जाता है।

२—मस्स को खुजलाकर दो तीन दिन सज्जी और चूना मिला कर लगावें इससे मस्सा गिर पड़ेगा।

॥ मुहासे की दवा ॥

१—दूब पर पड़ी हुई ओस लगाने से मुहास निकलने बन्द जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—सुबह दातुन करते समय दातुन के कुंचे मुंह पर फेरने से मुहासे साफ हो जाते हैं और फिर नहीं निकलते।

३—गुलाब के फूल का अर्क लगाने से मुहासे साफ हो जाते हैं।

४—नीबू के अर्क में नौसादर मिलाकर लगाने से मुहासों को आराम होता है।

※ बगल गन्ध ※

१—बन तुलसी की पत्ती पीसकर दो तीन दिन लगाने से बगल गन्ध जाती रहती है।

२—नीम की पत्ती पानी में उबाल कर उसी पानी से एक हफ्ते धोते रहें इसस बगल गन्ध दूर हो जाती है।

※ गंजे की दवा ※

(पहचान—इससे सिर में छोटी छोटी फुन्सियां निकल आती हैं। खुजली होती है और सर के बाल उड़ जाते हैं।)

१—बासी पानी और कड़वा तेल हथेली पर रखकर उंगली से फेंटें। जब वह सफेद हो जाये तो उसे लगावे यह बहुत लाभकारी दवा है।

२—कच्चे आंवले को पीसकर लेप करे और एक घन्टे के बाद स्नान कर लें इससे बाल उड़ने बन्द हो जायेंगे।

※ जुकाम की दवा ※

१—एक तोला मेंहदी की पत्ती भिगा दें। सुबह शक्कर मिलाकर पियें इससे जुकाम जाता रहेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

※ जलन्धर रोग की चिकित्सा ※

(पचान पेट परदो में खराब पानी आ जाता हैं। पेट में सूजन आ जाती है। हाथ पांव सूज जाता है।)

१—जलन्धर के सूजन पर काली मिर्च पीसकर गर्म करके लेप करे इससे सूजन जाती रहती है।

२—हुक्के का पीला पानी थोंड़ा थोड़ा कुछ दिन पियें इससे जलन्धर जाता रहेगा।

३—छः माशा करील की जड़ कूटकर रोज खायें और उसी का लेप करें इससे जलन्दर ठीक हो जायेगा।

※ पेट का दर्द ※

१—पाखाने के समय बांये पैर पर जोर देकर बैठे इससे दस्त साफ होगा और पेट का दद जाता रहेगा।

२—गन्ने का रस पीना अथवा गन्ना चूसना पेट के लिए बहुत गुणकारी है।

३—दस्त लाने के लिए अण्डो का तेल बहुत हो अच्छी दवा है।

४—मठा पीना पेट रोग के लिए बहुत लाभदायक दवा है। इससै बदहजमी तथा बवासीर वगैहरा सब रोग दूर हो जाते हैं।

५—एक माशा नौसादर नित्य खाने से भूख खुलकर लगती है और पेट साफ रहता है।

६—खाना खाने के बाद पेट पर हाथ फेरना, फौरन पेशाब करना तथा चालीस कदम टहलना हाजमे के लिये बहुत लाभदायक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७—दो रत्ती हींग खाने से पेट का दर्द हो जाता हैं।

८—इसबोल की भूसी दूध में मिला कर पीने अथवा पेड़े के साथ मिलाकर खाने से आवदस्त साफ होता है और पेट की गड़बड़ी दूर हो जाती हे।

※ खून की कै ※

१—तीन माशा गुड़ या मिश्री में सगजराह मिला कर खिलायें इससे अवश्य लाभ होगा।

२—मठे में भूरी हुई हल्दी और जीरा पीसकर मिलादे और उसे पिलादे इससे कै शान्त हो जायेगी।

※ कै (उबकाई की दवा) ※

१—नारियल की जटा जलाकर उसकी राख में सफेद नमक मिलाकर पानी में घोलकर पिलादे इससे फौरन बन्द हो जायेगी।

२—नीबू के रस में नमक और काली मिर्च मिलाकर थोड़ा सा पिलावें इससे उबकाई और कै बन्द हो जायेगी।

३—पेट के ऊपर राई का प्लास्टर लगाने से कैसी भी कै हो बन्द हो जायेगी।

४—पोदीने का रस लेकर उसमें नमक मिलाकर थोड़ा पिला दें इससे तुरन्त आराम होगा।

※ नजले जुकाम की औषधि ※

१—रुई में पीली सरसों का तेल लगाकर नाक के दोनों नथुनो में दिमाग में चढ़ावे पन्द्र दिन के अन्दर पुराना नजला भी दूर हो जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—बाजरा, चना और अरहर दरदरा कूटकर और नमक मिलाकर पोटली बनाले और गम करके सेकें, इससे आराम होगा

३—हल्दी का धुआं नाक में पहुँचाने से जुकाम जाता रहेगा यदि जकाम बन्द हो गया हो तो सिरस का बीज छाया में सूखा कर महीन पीसकर हुलास लें। इससे जुकाम खुल जाएगा।

४ - सूरज निकलने से पहले ठण्डे पानी से नहाकर सिर पर गम पानी डालें इससे जुकाम नहीं होगा।

५—पानी को चार घड़ी धूप में रक्खें। इसके बाद चार घड़ी ओस में रख कर पियें यह शर्तियां इलाज है।

* अण्ड वृद्धि (फोतों का बढ़ जाना *

१—तम्बाकू के पत्ते पर तेल लगाकर नर्म करके बांधने से सूजन जाती रहती है।

२—इसके लिये लगोटा हमेशा बांधना बहुत अच्छा है।

३—धतूरे के पत्तों को गर्म करके फोते पर बांधे इससे सूजन और दर्द जाती रहेगी।

४—पानी में अरहर पीस कर लगावें इससे फायदा होता है।

५—पखाने के बाद खड़े होकर पेशाब करना इसके लिए फायदे मन्द है।

* लू लगना *

१—जलती हुई राख में कच्चे आमों को भूनकर उसमें पेड़ा मिलाकर शर्बत बनाकर पिवें। इससे लू का असर फौरन दूर हो जा जायेंगी।

२—प्याज की एक पोटी जेब में रखने से लू का असर नही होता। प्याज की भाजी खाना भी इसके लिये लाभकारी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

※ हैजे (कलरा) की दवा ※

(पहचान—इस रोग में कै और दस्त कभी कभी केवल दस्त आती है तथा पेशाब बन्द हो जाता है।)

१—हैजे के दिनो में ककड़ी खाना बहुत हानिकारक है तथा कपूर साथ रखने से हैजे का असर नहीं होता।

२—जिस समय हैजे का असर मालूम हो। उस समय ठण्डा पानी पिलायें, किन्तु दस्त शुरू होने पर जरा भी पानी न पिलायें वर्ना फौरन मृत्यु हो जाएगी।

३—नीम की सींकों के गांठों को बारीक पीसकर पिलाना इसके लिये बहुत लाभकारी है।

४—हैजे की शिकायत होते ही दो तीन घण्टे ठण्डे जल से स्नान कराये इससे असर जाता रहता है।

५—पोदीने और प्याज का रस पिलाने से हैजे में शर्तिया लाभ होता है।

❀ दिल के रोगों का उपचार ❀

※ बेहोशी या मूर्छा से होश में लाने को दवा ※

(पहचान- इस मर्ज में आदमी चित्त पड़ जाता है। उसका होशहवास जाता रहता है।

१—चमड़ें का जूता जो पहना हुआ हो उसे सुंघाने से बेहोश को फौरन होश आ जाता है।

२—कड़े हाथों से मरीज की मालिश करें ताकि उसे कुछ तकलीफ महसूस हो। इस प्रकार पैर से लेकर सिर तक मालिश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना आवश्यक है।

३—कपूर सुंघने अथवा दोनों रानों पर पट्टियां कसकर बांधने से भी मरज होश में आ जाता है।

४—बेहोश आदमी के शरीर में मीठे तेल की मालिश करना भी अत्यधिक फायदा पहुंचाता है।

※ पागलपान (खफक़ान) की चिकित्सा ※

पहचान—इसमें दिल कांपता है और बेहोशी सी रहती है और दिमाग ठीक काम नहीं करता।

२—दो माशे अच्छी नरवसी शराब गुलाब के साथ बारीक पीसकर देने से यह मर्ज अवश्य दूर हो जाता है।

❀ सीना और फेफड़े के रोगों का उपचार ❀

※ दमा रोग की चिकित्सा ※

पहचान—इस मर्ज में खांसी आती है, कफ गिरता है और सांस बढ़ जाती है कभी कभी दम बहुत फूलता है।

१—सौंप के अर्क में मुलहटी पीसकर छान लें और गुन गुने पानी के साथ इसे पीने से सांस की खराबी तुरन्त दूर हो जाती है और सांस आसानी से जाने लगती है।

२—थोड़ी थोड़ी महुवे की कच्ची शराब का प्रयोग करना इसके लिये लाभदायक है।

※ सिल रोग की दवा ※

(पहचान—इससे फेफड़ों में जख्म हो जाता है। और खांसने पर पीव आती है तथा बुखार बना रहता है।)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१—पांच माशे मुलतानी मिट्टी पानी में घोलकर पीते रहें और ऊपर से खुप का रस पियें। इससे यदि थूक खून में आता होगा तो बन्द हो जायेगा।

२—शहद में, पियाबासा के छः माशे सूखे पत्ता पीसकर मिलादें, इसे खाने से थूक में खून आना बन्द हो जायेगा।

※ खांसी की दावा ※

१—शहद के साथ कमल गट्टा चाटने से खांसी अच्छी हो जाती है।

२—नमक की डली मुंह डालकर चूसते रहने से खांसी बन्द हो जाती है।

३—पीपल को चिलम में रखकर तम्बाकू की भांति पीने से खांसी जाती रहती है।

४—कई बार आईना देखते रहने से खांसी दूर हो जाती है।

५—गुदा स्थान पर तेल मलना खांसी के लिये फायदेमन्द है

गले के रोगों की दवा

※ कंठ माला ※

१—बरगद का पत्ता गर्म करके बांधने से अथवा बरगद का दूध लगाने से कण्ठमाला बैठ जाती है।

२—गले में चिरचिटे की जड़ बांधने से कण्ठमाला ठीक हो जाती है।

※ आवाज बैठ जाना ※

१—गन्ने को भूभल में सेखकर चूसने से गला खुले जाता हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—अगर खुश्की या गरमी की वजह से आवाज पड़ गई हो तो मिश्री मक्खन मिलाकर चाटने अथवा मिश्री और बादाम मिलाकर चबाने से आवाज खुल जाती है।

३—पान के साथ थोड़ी सी मुलहटी मुंह में दबाकर सो जायं सुबह तक गला अवश्य साफ हो जायेगा।

※ खुनाक रोग की दवा ※

पहचान—गले के अन्दर सूजन आ जाती है। जिसमें कोई चीज खाने पीने अथवा थूक निकलने में भी बहुत दर्द होता है।)

१—चार माशे महुवे की गुठली बारीक पीसकर फांक लें ऊपर से दो घूंट ताजा पानी पियें। इससे शीघ्र आराम हो जायेगा।

२—मुर्गे की बीट सिरके में मिलाकर लेप करने से सूजन दूर हो जाती है अगर अन्दर में पक गया हो तो फूट जाता है।

नाक के रोगों की चिकित्सा

नकसीर (बिनाश) रोग की दवा

पहचान—इस मर्ज में नाक से खून गिर जाता है और कभी-कभी बहुत खून गिर जाता है।)

२—यदि खून किसी प्रकार न बन्द होता हो तो हाथ पैर को ठण्डे पानी में खूब धोयें और सिर पर ठण्डा पानी डालें। इससे खून आना तुरन्त बन्द हो जायेगा।

३—सिर के ऊपर पोतनी मिट्टी गीली करके रखने से खून आना बन्द हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* नाक के कीड़े *

१—तारपीन के तेल में कपड़े की बत्ती भिगोकर फिर कबीले मे भिगो कर नाक में रख दे। इससे कीड़े नाक से निकल आयेंगे।

२—रोगनेगुल में कपूर घिसकर नाक में सुंघने से कीड़े मर कर निकल जायेंगे।

* नाक से बदबू आना *

एक तोला रोगनेगल और एकमाशा कपूर घिसकर नाक मे चढ़ावे इससे तीन चार दिन में नाक की बदबू जाती रहेगी।

कान की बीमारियाँ

* कान का बहरापन और दर्द की दवा *

१—लहसुन का अर्क दो तीन बूद कान में टपकामें इससे सर्दी से होता हुआ दर्द फौरन ठीक हो जायेगा। यदि फुन्सी होगी तो वह बह जायेगी या बैठ जायेगी।

२—यदि कान में जख्म हो तो कान में बरगद की दो बूंद दूध टपकामें इससे फौरन लाभ होगा।

३—सेम की पत्ती का अर्क निकालकर थोड़ा गर्म करके कान में डाले इसमे कान के दर्द को फौरन आराम होगा।

* कान के कीड़े *

१—कान में सिरका डालने से कीड़े मरकर बाहर आ जाते हैं और आराम हो जाता है।

२—तारपीन का तेल कान में टपकाने से कीड़े मर कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहर आजायेगे और कानों को आराम हो जायेगा।

* कान में पानी आना *

यदि कान में पानी पड़ गया हो तो काम में कुछ लम्बा सा तिनका डालकर उसके दूसरे सिरे में आग लगा दे और कान को जमीन की तरफ टेड़ा किये रहें इससे कान का सारा पानी बाहर निकल जायेगा।

दांतों के रोगों की दवा

१—दांतो के नीचे कपूर टुकड़ा दबाने से दर्द दूर हो जाता है यदि सूराख हो गया है तो उसमें कपूर भर देने से और नहीं बढ़ेगी और कीड़े मर जायेगे।

२—जिस वक्त आबदस्त लेने बैठें मुंह बन्द रक्खे और दांत से दांत दबाये रक्खे इससे दर्द बन्द हो जायगा।

३—नीम की दातुन का इस्तेमाल करने से दांत के हर रोग जाते रहने हैं अतः नीम की दातुन हमेशा इस्तेमाल करते रहना चाहिए।

४—मोठ और कपूर पानी में पीस कर जिस डाढ़ मे दर्द हो उसके दूसरी के कान मे टपकाना बहुत ही लाभकारी है।

* मुख का रोग *

१—मिश्री को बारीक पीसकर उसमे थोड़ा सा कपूर मिला [illegible] वधा। यह दवा बच्चों के लिए बहुत लाभकारी है।

[illegible] नागर मोथा चबाने से मुंह की दुर्गन्ध जाती रहती है।

—:※:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागरी के मन्त्र

सूर, तुलसी, कबीर आदि प्राचीन तथा कुछ अर्वाचीन नगरी के कवियों द्वारा भी मन्त्र बनाये गए हैं कि जो दोहा, चोपाई के रूप में हैं। काम रूप की लोना चमारी, के मंत्र भी दोहा, चौपाई में हैं। नागरी के मन्त्रों को 'सावर मन्त्र जाल' कहते हैं।

अगर किसी काम की सिद्धि देर में चाही तो शाम तथा प्रातः केवल इक्कीस बार उस मन्त्र का जप एकाग्र होकर करना चाहिए और अगर शीघ्र फल चाहो तो प्रातः सांय १०८ बार मन्त्र पढ़ना चाहिए। मन्त्र पढ़ते समय अगर शंका रही तो काम सफल न होगा। निश्चय ही मंत्र फलदायक होता है। ध्यान अपने काम की इच्छा में रखना ठीक है। मन्त्र जाप के प्रथम अपनी इच्छा प्रकट कर देना चाहिए।

कुछ सावर मन्त्र

मन्त्र सिद्ध करने के लिये, कोई अनुष्ठान करने के लिए, अथवा किसी संकट पूर्ण स्थान पर रात व्यतीत करने के लिए रक्षा की रेखा खींचना चाहिए और वह रेखा गोल वृत्ताकार हो होनी चाहिये। त्रिभुजाकार नहीं होनी चाहिए। लक्ष्मण जी ने सीता जी की कुटी के आसपास रेखा खींची थी। उसी लक्ष्य पर रक्षा मन्त्र बनाया गया है। इस मन्त्र को पढ़ते हुये तीन बार रेखा खींचनी चाहिए।

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।
धृत वर चाप रूचिर कर सायक।।

१—विपत्ति नाश के लिए—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजिवनयन धरे धनु सायक ।
भगत विपिति भजन रघुनायक ।।

२—संकट नाश के लिए—

जा प्रभु दीनदयाल कहावा ।
आरति हरन बेद जस गावा ।।
जपहि नाम जन आरत भारी ।
मिटहि कुसंकट होय सुखारी ।।
दीन दयाल विरद सुम्भारो ।
हरहु नाथ मम संकट भारी ।

३—कठिन क्लेश के लिये—

हरन कठिन कलि कलषु कलेसू ।
महा मोह निसि दलन दिनेसू ।।

४—विघ्न नाश के लिए—

सकल विघ्न व्यापहि नहीं तेहि ।
राम कृपाकर चितवहिं जेहि ।।

५—खेद नाश के लिए—

जब ते राम ब्याह घर आए ।
नित नव मङ्गल मोद बधाए ।।

६—ताऊन, हैजा से रक्षा निमित—

जय रघुवीर वजन वनभानू ।
गहन दनुज कलि दहन कृशानु ।।

[illegible]वध रोगों से रक्षा—

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
रामराज्य काहू नहिं व्यापा ।।

८—मस्तिष्क पीड़ा दूर करने के लिये—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हनुमान अंगद रन गाजे।
हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥

इस मन्त्र को पढ़ना जाये और मस्तक पर अगुली से जोर रेखा खींचते जायें।

९—विष नाश के लिए—

नाम प्रभाव जान शिव नीके।
काल कूट फल दीन अमीके ॥

१०—अकालमृत्यु निवारण के लिए—

नाम पहारू दिवस निसि, ध्यान तुम्हारा कपाट।
लोचन निज पद जन्त्रित, प्राज जाहिं के ह बाट ॥

११—भूत बाधा दूर करने के लिए—

प्रनवऊं पवनकुमार खल वन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शर चाप घर ॥

१२—नजर झाड़ने को—

श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी।
निरखहिं छवि जननी तन तेरी ।

१३—खोई वस्तु पुनः मिले—

गई बहोर गरीब निवाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू ॥

१४—जीविका प्राप्ति के लिए—

विश्व भरन पोसन कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई ॥

१५—दरिद्रता नाश के लिए—

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh